सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

दिसम्बर, 2020 वर्ष 19 अंक 10

माह दिसम्बर आया है

माह दिसम्बर आया है
बढ़िया जाड़ा लाया है
गर्म रज़ाई और लिहाफ़
इसने सबको उठाया है
ग़िज़ा मुक़व्वी मेवे जात
क्या ही ख़ूब खिलाया है
गोश्त ख़ुदा की नेअ़मत है
लज़्ज़त उसकी बढ़ाया है
गर्म चाय और काफी भी
सबको इसने पिलाया है
शुक्र ख़ुदा का मुझसे भी
दुरूद व सलाम पढ़ाया है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
इस्लामिक जीवन का आधार	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
नारी की प्रतिष्ठा और उसके	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
खिलाफ़ते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	15
मदरसे मुस्लिम उम्मत के लिए	हज़रत मौ0 अबुलहसन अली नदवी रह0	19
इस्लाम से नफ़रत क्यों	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	26
हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम (पद्य)	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	30
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	ई0 जावेद इक़बाल	31
दुआ (पद्य)	इदारा	33
मेहमान नवाजी	माइल ख़ैराबादी	34
वास्तविक सफलता	उबैदुल्लाह मतलूब	36
कोरोना से सावधान	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	37
चुटकुले	इदारा	38
पुदीना	फ़ौजिया सिद्दीका	39
तब्लीग़ की अहमियत	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

उनकी क़ौम ने जवाब में केवल यह कहा कि इनको बस्ती से निकाल बाहर करो यह वे लोग हैं जो बड़े संयमी बनते हैं(82) तो हमने उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाए उनकी बीवी के वह उन्हीं पीछे रह जाने वालों में रह गयीं(83) और हमने उन पर और ही वर्षा की तो आप देख लीजिए अपराधियों का अंजाम कैसा हुआ[1](84) और मदयन (वालों) की ओर उनके भाई शोऐब को भेजा, उन्होंने कहा कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके अलावा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास खुली दलील (प्रमाण) आ चुकी, नाप तौल पूरी पूरी करो और लोगों की चीज़ों को कम करके मत दो और ज़मीन में उसके सुधार के बाद बिगाड़ मत करो, तुम्हारे लिए यही बेहतर है[2] अगर तुम मानते हो(85) और हर रास्ते पर बैठ मत जाओ कि डराते धमकाते रहो और ईमान लाने वालों को अल्लाह के रास्ते से रोकते रहो और उसमें टेढ़ तलाश करते रहो और याद करो जब तुम बहुत कम थे तो उसने तुम्हारी संख्या बढ़ाई और देख लो कि बिगाड़ करने वालों का अंजाम कैसा हुआ(86) और अगर तुम में कुछ लोग मेरी लाई हुई चीज़ पर ईमान लाए और कुछ न लाए तो सब्र करो यहां तक कि अल्लाह हमारे बीच फैसला कर दे और वही बेहतर फ़ैसला करने वाला है(87) उनकी क़ौम के सम्मानित लोगों में जो बड़े घमण्डी थे वे बोले ऐ शोऐब! हम तुम को और तुम्हारे साथ ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे या तो तुम हमारे दीन में लौट आओ उन्होंने कहा चाहे हमें यह ना पसंद ही हो(88) अगर हम तुम्हारे दीन में लौटे जब कि अल्लाह ने हमें उससे निजात दी तो हमने अल्लाह पर बड़ा झूठ गढ़ा और हम तुम्हारे दीन में लौट ही नहीं सकते सिवाए इसके कि अल्लाह ही की इच्छा हो जो हमारा पालनहार है[3], हमारे पालनहार का ज्ञान हर चीज़ को समेटे हुए है, हम अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं, ऐ हमारे पालनहार! तू हमारे और हमारी क़ौम के बीच इंसाफ़ से फ़ैसला कर दे और तू बेहतर फैसला करने वाला है(89) और उनकी क़ौम के सम्मानित लोगों में जिन्होंने इनकार किया वे बोले कि अगर तुम शोऐब के पीछे चलोगे तो तुम्हें बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा(90) फिर भूकंप ने उनको आ दबोचा तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये(91) जिन्होंने शोऐब को

झुठलाया वे ऐसे हो गये कि मानो वहां वे बसे ही न थे जिन्होंने शोऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे[4](92) फिर वे उनसे पलटे और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपने पालनहार का संदेश तुम को पहुंचा दिया और तुम्हारा भला चाहा, अब न मानने वाले लोगों पर क्यों दुःखी होऊँ(93) और जब भी हमने किसी बस्ती में पैग़म्बर भेजा तो वहां के वासियों को सख़्ती और तकलीफ़ में डाला कि शायद वे नर्म पड़ें(94) फिर हमने बदहाली की जगह खुशहाली प्रदान कर दी यहां तक कि जब वे आगे बढ़ गए और कहने लगे कि दुःख और सुख तो हमारे बाप–दादा को भी पहुंचते रहे हैं तो अचानक हमने उनको पकड़ लिया और उन्हें इसका एहसास भी न था[5](95)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. हज़रत लूत की क़ौम घोर अश्लीलता व कुकृतियों में लिप्त थी हज़रत लूत को उनके सुधार के लिए भेजा गया जब उन्होंने बात न मानी और कहने लगे जब ये बहुत पाक बनते हैं तो उनको बस्ती से निकाल बाहर करो तो पूरी क़ौम पर पत्थर बरसाए गए उनकी पत्नी भी चूंकि उन अपराधियों की सहायक थीं और आने वाले मेहमानों की सूचना उनको देती और कुकर्म पर उभारती इसलिए वह भी उन्हीं में शामिल की गईं, वर्तमान बाइबिल की शर्मनाक दुःसाहस पर शोक प्रकट करना चाहिए ऐसे पवित्रचारी पैग़म्बर से ऐसी अपवित्र हरकतें जोड़ी कि जिसके सुनने से लज्जावान आदमी के रोंगटे खड़े हो जाएं।

2. हज़रत शोऐब को मद्यन भेजा गया ''मद्यन'' हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के एक सुपुत्र का नाम है उन्हीं की संतान में हज़रत शोऐब भेजे गए, यह क़ौम दुर्व्यवहार, विश्वासघात और नाप तौल में कमी की आदी थी, हज़रत शोऐब ने उनके सामने बहुत ही सुन्दर शैली में इसकी बुराई और दुन्या व आख़िरत में उसके नुकसान बयां किए, व्यवहार के महत्व का इससे अनुमान किया जा सकता है कि पूर्णरूप से एक पैग़म्बर को इसके सुधार के लिए भेजा गया।

3. यह केवल विनम्रता और भक्ति प्रकट करने के रूप में था वरना पैग़म्बर के साथ ख़ुदा का यह व्यवहार हो ही नहीं सकता कि वह कुफ़्र व इनकार का रास्ता अपनाए।

4. इस क़ौम पर तीन अज़ाब बार–बार आए जिनको ''जुल्लह'' ''सैहा'' और ''रज्फ़ा'' कहते हैं यानी पहले काले बादल से अंधेरा हुआ फिर उस बादल से आग और चिंगारियाँ बरसीं और उसके साथ भयानक आवाज़ों ने हिला कर रख दिया फिर तेज़ भूकंप आया और पूरी क़ौम का सर्वनाश हो गया।

5. यहां अल्लाह ने अज़ाब का एक नियम बयान किया है कि क़ौम जब पैग़म्बर की बात नहीं मानती तो मुसीबतों में डाली जाती है ताकि उसको होश आ जाए, इस चेतावनी से अगर उनके दिल नर्म पड़ते हैं तो सख़्तियों की जगह सुख सुविधा का दौर आता है ताकि वे आभारी हों लेकिन जब क़ौम इस तकलीफ़ और आराम को संयोग की बात करार दे कर ढीठ बनी रहती है और कहती है कि यह तो हमेशा से होता चला आया है तो फिर वह कठोर अज़ाब में डाली जाती है।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मौत की तमन्नाः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ऐसा ज़माना आने वाला है कि आदमी क़ब्रों के पास से गुज़रेगा और कहेगा काश इस कब्र वाले की जगह मैं होता, लेकिन यह तमन्ना दीनदारी की वजह से न होगी बल्कि मुसीबतों और आफ़तों से तंग आ कर लोग ऐसा कहेंगे।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया क़यामत के क़रीब ''फुरात'' (इराक देश का एक दरिया) फट जायेगा और सोने का पहाड़ निकल आयेगा, उस सोने पर ऐसा खून खराबा होगा कि 100 में से 99 लोग मारे जायेंगे और उनमें से हर एक उम्मीदवार होगा कि शायद मैं बच जाऊँ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि क़रीब है कि फुरात से ढेर सारा सोना निकले तो उस ज़माने में जो मौजूद हों वह उसको बिल्कुल न छुयें।

मदीने की वीरानीः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना है आप सल्ल0 फरमाते थे मदीने को लोग अच्छी हालत पर छोड़ जायेंगे, उस समय वहां सिवाय जानवरों, दरिन्दों और चिड़ियों के कोई न रह जायेगा, आखिर में ''मुज़ैना'' क़ौम के दो चरवाहे मदीना जाने का इरादा करेंगे, जब मदीने के करीब पहुंचेंगे, तो अपनी बकरियों को आवाज़ दे कर हंकायेंगे तो वह बकरियाँ भी वहशी हो जायेंगी, फिर वह दोनों जब ''सनीयतुल वदाअ़'' पहुंचेंगे तो मुंह के बल गिर पड़ेंगे (यानी मर जायेंगे)।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

माल की ज़ियादतीः–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया आखिर ज़माने में एक खलीफ़ा होगा जो लोगों को मुट्ठी भर भर कर माल देगा और गिनेगा नहीं। (मुस्लिम)

मर्दों और ज़रूरतमन्दों की कमीः–

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ऐसा ज़माना आने वाला है कि लोग सोना ज़कात में (देने के लिए) लिये फिरेंगे और लेने वाला कोई न होगा और चालीस औरत का निगहबान सिर्फ एक मर्द होगा, मर्दों की कमी और औरतों की ज़ियादती की वजह से। (मुस्लिम)

पहले ज़माने की दयानतदारीः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि एक आदमी ने एक दूसरे आदमी से ज़मीन खरीदा, खरीदने के बाद उसमें एक घड़ा निकला जो सोने से भरा था, खरीदार वह घड़ा ले कर (ज़मीन) बेचने वाले के पास गया और कहा लो यह अपना सोना, मैंने तुम से ज़मीन खरीदी थी, सोना नहीं खरीदा था, वह बोला यह मेरा कैसे हो सकता है, मैंने जब तुम्हारे हाथ ज़मीन बेची तो जो कुछ उसमें था सब बिक गया, अब यह तुम्हारा हक़ है, मैं तुम्हारा हक़ कैसे ले लूं, इसके बाद वह मुक़दमा हाकिम के पास गया, हाकिम ने दोनों से पूछा कि तुम्हारे औलाद भी है एक ने कहा मेरा एक लड़का है, दूसरे ने कहा मेरे एक लड़की है, हाकिम ने कहा, बस दोनों का निकाह आपस में कर दो, और यह माल उन्हीं पर खर्च करो तो उन्होंने यही किया।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत सुलैमान अलै0 का फैसलाः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से सुना है, फरमाते थे कि हज़रत दाऊद अलै0 के ज़माने में दो औरतें थीं, दोनों के एक एक लड़का था, इत्तेफाक से एक लड़के को भेड़िया उठा ले गया, अब दोनों आपस में झगड़ने लगीं एक कहती थी कि तेरे बेटे को उठा ले गया, दूसरी कहती थी नहीं मेरा बेटा सलामत है तेरे लड़के को ले गया, आखिरकार वह दोनों हज़रत दाऊद अलै0 के पास फैसला कराने आयीं, हज़रत दाऊद अलै0 ने बड़ी औरत को लड़का दिलवा दिया, फिर वह दोनों हज़रत सुलैमान अलै0 के पास आईं और वाक़िया बयान किया, हज़रत सुलैमान अलै0 ने फरमाया छुरी लाओ तो मैं इस लड़के को आधा आधा कर के दोनों को दे दूं, छोटी औरत घबरा गई, कहने लगी अल्लाह आप पर रहम फरमाये आप ऐसा न कीजिए, यह लड़का बड़ी औरत का है (यानी मैं अब दावा नहीं करती कि मेरा है ज़िन्दा रहे, चाहे जिसके पास रहे) इसके बाद तो हज़रत सुलैमान अलै0 समझ गये और लड़का छोटी औरत को दिला दिया।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

आख़िर ज़माने के लोगः-

हज़रत मिरदास अस्लमी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाले लोग एक के बाद एक चले जायेंगे यानी इन्तेक़ाल कर जायेंगे, बाक़ी लोग खजूर या जौ के भूसे की तरह रह जायेंगे जिनकी अल्लाह तआ़ला को कोई परवाह न होगी।

(बुख़ारी)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

इस्लामिक जीवन का आधार अगला शाश्वत जीवन

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लामी ज़िन्दगी की बुन्याद आखिरत की दाइमी ज़िन्दगी है, अगला जीवन परोक्ष (ग़ैब) में है, उसको हम अपनी आँखों से देख नहीं सकते, उसकी जानकारी हर आसमानी मज़हब के पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) ने दी, और अब अगले जीवन की जानकारी का माध्यम केवल अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर निर्भर है, अल्लाह के अन्तिम नबी ने कहा मैं अल्लाह का नबी हूँ और कहा अल्लाह के सिवा कोई और माबूद नहीं है, उन्होंने कहा, कहो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। हम लोगों ने गवाही दी, उन्होंने कहा, यह कुर्आन अल्लाह की किताब है, अल्लाह का कलाम है, हम पर हज़रत जिब्रील द्वारा उतारा गया है, हम लोगों ने मान लिया, उन्होंने बताया, अगले जीवन के दो ही ठिकाने हैं, जन्नत का सुख है, अल्लाह की रिज़ा है या जहन्नम का दुख है, उनकी शिक्षाओं के अनुसार अगला जीवन मौत के बाद ही से आरम्भ हो जाता है, मौत के बाद मुर्दा क़ब्र में दफ़न किया जाये या पानी में डूब जाये या आग में जल कर राख हो जाये हर हाल में उसके प्राण (रूह) एक विशेष शरीर के साथ जहां रखे जाते हैं, उसको आ़लमे बर्ज़ख़ कहते हैं, आ़लमे बर्ज़ख़ के दो भाग हैं, इल्लीयीन और सिज्जीन, जिन लोगों ने अपने ज़माने के पैगम्बर का कहना माना उनको इल्लीयीन में जगह दी जाती है, वह वहां आराम से रहते हैं, लेकिन जिन लोगों ने अपने ज़माने के पैग़म्बर को न माना उनको सिज्जीन में जगह मिलती है, सिज्जीन में दुख ही दुख है। आलमे बर्ज़ख़ की जिन्दगी को हम क़ब्र की ज़िन्दगी कह सकते हैं इसका ज़माना बहुत ही लम्बा है फिर अल्लाह के नबी की शिक्षानुसार अल्लाह के हुक्म से इसराफील अलै0 सूर फूकेंगे, तो सब कुछ खत्म हो जायेगा, न दुन्या न दुन्या का जीवन रहेगा न आलमे बर्ज़ख़ का, सूर की तीव्र ध्वनि से सूर्य, चन्द्रमा और तारे सब टूट फूट जायेंगे, आकाश फट जायेगा, बड़े–बड़े पहाड़ धुनकी ऊन की तरह उड़ते फिरेंगे, सब कुछ ख़ात्म हो जायेगा, केवल अल्लाह रहेगा, फिर जब दोबारा सूर फूंकेंगे, उसकी आवाज़ से फिर सब कुछ अस्तित्व में आ जायेगा। सारे इन्सान जीवित हो कर एक बड़े मैदान में जमा होंगे। जिसको हश्र का मैदान

कहते हैं, हश्र के मैदान में कोई साया न होगा बड़ी सख्त गर्मी होगी, ज़मीन जल रही होगी लेकिन जिन लोगों ने अपने पैग़म्बर का कहना माना होगा उनको हश्र का विशेष साया मिलेगा अब कर्मो का लेखा जोखा होगा, आमाल का हिसाबो किताब होगा, हर एक के लिए अल्लाह की ओर से फैसला होगा, जिन लोगों ने अपने ज़माने के पैग़म्बर को माना होगा, उनकी शिक्षाओं के अनुकूल जीवन बिताया होगा, उनको जन्नत का परवाना मिलेगा, उनसे अल्लाह राजी होगा, लेकिन जिन लोगों ने अपने ज़माने के पैग़म्बरों को नकारा होगा उनको जहन्नम का परवाना मिलेगा, उनसे अल्लाह नाराज होगा, कुछ लोग ऐसे भी होंगे जिन्होंने अपने ज़माने के पैग़म्बर को तो माना होगा लेकिन उनसे बड़े–बड़े पाप हो गये होंगे और उन्होंने तौबा न की होगी उन पापों की सज़ा के लिए कुछ दिनों के लिए जहन्नम में डाला जायेगा फिर नबी की सिफारिश से या किसी अल्लाह वाले की सिफारिश से निकाल कर जन्नत में पहुँचाया जायेगा, जन्नत में ऐसा कुछ सुख होगा जिस की कल्पना असंभव है, स्वच्छ जल की नहरें, स्वादिष्ट दूध की नहरें, स्वादिष्ट शहद की नहरें, हर प्रकार के स्वादिष्ट फल, चिड़ियों का गोश्त, सिर में दर्द न लाने वाली स्वादिष्ट मदिरा सबसे आश्चर्य जनक बात यह है कि वहां चाहे जितना खाओ पियो न अफारा न बदहज़मी न पाखाना, न पेशाब, डकार आयी सब हज़्म, सोने चांदी के घर, सोने चांदी के पलंग, सुन्दर रेश्मी वस्त्र, आनन्द लेने के लिए सुन्दर हूरें जो औरतें जन्नत में जायेंगी अगर उनका प्रिय पति भी जन्नत में जायेगा तो वह उसी के साथ रहेंगी जिस जन्नती औरत का शौहर जन्नत में न जायेगा या जिन औरतों की शादी नहीं हुई वह जन्नत में जिस मर्द को चाहेंगी उसके साथ रहेंगी, जन्नती हूरों और औरतों का स्वभाव अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है कि वह जिस मर्द को दी गयी हैं उसके अतिरिक्त की उनको इच्छा ही न होगी, इस संसार में बाज़ बाज़ारी औरतें बकती हैं कि मर्दों को जैसे एक से अधिक हूरें मिलेंगी तो औरतों को एक से अधिक मर्द क्यों न मिलेंगे, यह उनका अल्लाह तआला पर ऐतराज़ है अल्लाह ने बकरी को शाकाहारी बनाया तो कुत्ता कैसे कह सकता कि बकरी को मांसाहारी क्यों नहीं बनाया? जन्नत में हर हूर और हर औरत जिस मर्द को दी जायेगी काम इच्छा के विषय में वह उससे संतुष्ट रहेगी, वह जन्नत है वहां मर्द को इतनी शक्ति मिलेगी कि वह अपने हर हूर को और हर बीवी को संतुष्ट और प्रसन्न रख सके।

शेष पृष्ठ ....18....पर...

नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

इस्लाम से पहले नारी की दशाः–

पहले हम यहाँ प्रस्तावना की कुछ बातें कहना चाहते हैं जो उन उपायों को समझने क लिए आवश्यक हैं जो इस्लाम ने औरतों के हित में किये हैं। हम यहां विख्यात अरब विद्वान आचार्य अब्बास महमूद अल–अक़्काद की पुस्तक ''अल–मरअतु–फिल –कुरआन'' के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जो इस विषय पर विस्तृत शोध कार्य की हैसियत रखती है।

विद्वान लेखक ने इस्लाम से पहले धर्म और समाज में नारी के स्थान पर बहस करते हुए लिखा हैः–

''हिन्दुस्तान में मनु की शरीअत (धर्म शास्त्र) पिता, पति अथवा दोनों के निधन हो जाने की दशा में बेटे से अलग औरत का कोई मुस्तक़िल हक़ नहीं मानती थी, और इन सब के निधन के बाद उसका पति के किसी निकट सम्बन्धी से सम्बन्ध हो जाना आवश्यक था। वह किसी दशा में अपने मामले में खुद मुख्तार नहीं हो सकती थी। आर्थिक मामलों में उसके अधिकारों के हनन से ज़ियादा सख्ती उसके पति से अलग ज़िन्दगी के इन्कार की सूरत में थी, जिसके अनुसार पत्नी को पति के मरने के दिन मर जाना और उसकी चिता पर सती हो जाना ज़रूरी था। यह पुरानी प्रथा प्राचीन काल से सत्तरहवीं शताब्दी तक बनी रही, और उसके बाद धार्मिक हल्कों की रुचि के बावजूद समाप्त हो गयी।

हमोराबी की शरीअत औरत को पालतू जानवर समझती थी। उसकी नज़र में औरत की हैसियत का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि उसके अनुसार अगर किसी ने किसी की लड़की की हत्या की है तो हत्यारे को अपनी लड़की क़त्ल की गयी लड़की के बदले में लड़की वाले के हवाले करनी होती थी ताकि वह उसे क़त्ल कर दे, या उसे दासी बना ले या क्षमा कर दे। किन्तु वह प्रायः शरीअत के आदेशों को कार्यान्वित करने हेतु क़त्ल ही की जाती थी। प्राचीन यूनान में नारी हर प्रकार के अधिकार और आज़ादी से वंचित थी, उसे ऐसे बड़े घरों में रहना होता था जो रास्ते से दूर, कम खिड़कियों वाले होते थे। और उनके दरवाज़ों पर परहेजगार नियुक्त होते थे। बीवियों और घरेलू औरतों के प्रति उदासीनता के कारण बड़े यूनानी शहरों में ऐसे आयोजनों का प्रचलन हो गया था जिनमें गाने वालियों और सुन्दरियों से दिल बहलाया जाता था। सभ्य आयोजनों में औरतों को मर्दों के साथ जाने की बहुत कम अनुमति थी। इसी प्रकार दार्शनिकों की मण्डली स्त्रियों से ख़ाली नज़र आती है। और पेशेवर औरतों या तलाक़ दी हुई औरतों जैसी

ख्याति व सम्मान किसी शरीफ़ औरत को प्राप्त नहीं हुआ।

अरस्तु स्पाटी वासियों पर आपत्ति करता था कि वह अपने परिवार की औरतों के साथ नर्मी बरतते हैं। और उन्होंने उनको विरासत, तलाक़ और आज़ादी के अधिकार दे रखे हैं जिनसे वह घमण्ड करने लगी हैं। वह स्पाटी के पतन को औरतों की बेजा आज़ादी ही का नतीज़ा समझता है।

प्राचीन रोमवासियों का औरतों के साथ मामला प्राचीन हिन्दुओं ही जैसा था, जिसके अन्तर्गत वह बाप, पति और बेटों के अधीन रहती थीं। अपनी सभ्यता के विकास के युग में उनका विचार था कि ''न औरतों की बेड़ी काटी जा सकती है न उसकी गर्दन से जुआ उतारा जा सकता है''। अतएव 'काटू' का कथन थाः—

"Nunguam Exvitur Servitus Mulie Brio" रूमी औरत इन बन्धनों से उसी समय आज़ाद हुई जब बग़ावत और अवज्ञापालन करके रूमी गुलाम आज़ाद हुए और औरत को गुलाम रखना असम्भव हो गया।''

आचार्य अक्क़ाद ने प्राचीन मिस्री सभ्यता में औरतों के कुछ अधिकारों का वर्णन करने के बाद लिखा हैः—

''इस्लाम से पहले मिस्री सभ्यता की गिरावट और उसकी विलासता की प्रतिक्रिया स्वरूप सांसारिक जीवन के घृणा की प्रवृति उदासीनता पैदा हो गयी थी। और धार्मिक प्रवृति ने शरीर और नारी को अपवित्र समझ लिया था तथा औरत को गुनाहों का जिम्मेदार ठहराया जाता था और ग़ैर ज़रूरत मन्द के लिए उससे दूरी अच्छी समझी जाती थी।

यह मध्य युग की इस प्रवृति ही का प्रभाव था कि पन्द्रहवीं सदी ईसवी तक कुछ धर्म के ठेकेदार नारी के स्वभाव के बारे में गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहे थे और 'माकोन' के सम्मेलन में वह यह प्रश्न कर रहे थे कि क्या नारी आत्मा विहीन शरीर है अथवा आत्मा रखने वाला शरीर है जिससे मोक्ष या मौत जुड़ी होती है। अधिकतर लोगों का विचार था कि वह मोक्ष पाने वाली आत्मा से ख़ाली है, और इसमें ईसा मसीह की माता कुमारी मरियम के अतिरिक्त कोई अपवाद नहीं।

रूमी युग की इस प्रवृति ने बाद की मिस्री सभ्यता में नारी के स्थान को प्रभावित किया। मिस्रवासियों पर रोम के अत्याचारों की क्रूरता उनके सन्यास और संसार से अरुचि का कारण बन गई थी अतएव बहुत से भक्त रहबानियत को ईश्वर के सानिध्य का साधन और शैतान के मकर से (जिसमें नारी सर्वोपरि थी) बचने का स्रोत जानते थे।

अनेक पश्चिमी इति—हासकार यह आरोप लगाते हैं कि इस्लाम ने अपनी शरीअत में अगली शरीअतों विशेष कर मूसवी शरीअत और कुर्आनी शरीअत में नारी के महत्व की तुलनात्मक अध्ययन से अच्छी तरह हो जाती है। अतएव हज़रत मूसा से सम्बद्ध किताबों की शिक्षा के अनुसार लड़की

बाप की मीरास से खारिज हो जाती है अगर उसका लड़का मौजूद हो।

यह उस हिबा की एक क़िस्म है जिसे बाप अपने जीवन में अंगीकार करता है ताकि मरने के बाद शरई वाजिबात की तरह मीरास वाजिब न हो।

मीरास के बारे में स्पष्ट आदेश यह है कि जब तक लड़का रहेगा, लड़की उससे वंचित रहेगी, और जिस लड़की को मीरास मिलेगी उसे किसी दूसरे क़बीले की तरफ़ मीरास हस्तान्तरित करने की अनुमति होगी। यह हुक्म तौरात में अनेक जगहों पर है।

अब हम उस पावन धरती की ओर चलते हैं जहां से कुर्आन की शिक्षा प्रारम्भ हुई अर्थात अरब प्रायद्वीप। किन्तु आपको वहां भी यह आशा न रखनी चाहिए कि वहां नारी के साथ न्याय तथा नर्मी का कोई अलग बर्ताव किया जाता था बल्कि अरब प्रायद्वीप के कुछ भागों में नारी के साथ दुर्व्यहार दुन्या के सारे देशों से अधिक था और कुछ भागों में उससे इसलिए अच्छा व्यवहार किया जाता था और उसका पति के यहां आदर किया जाता था कि वह किसी रोबदार रईस की लड़की अथवा किसी लोकप्रिय बेटे की माँ है। लेकिन उसका आदर केवल इसलिए किया जाता कि वह औरत है और इस हैसियत से उसके कुछ अधिकार हैं इसकी आशा नहीं करनी चाहिए कि पिता, पति, भाई और बेटे अपनी जायदाद में शामिल चीज़ों की तरह उसकी सुरक्षा करते थे, क्योंकि यह आदमी के लिए अवगुण था कि उसके घर का अपमान हो जिस तरह यह ऐब था कि उसके समर्थन प्राप्त अथवा किसी निषिद्ध वस्तु पर हाथ डाला जाये जिसमें उसके घोड़े, जानवर, कुआँ तथा चरागाह शामिल थी। वह माल व जानवरों के साथ मीरास में हस्तान्तरित की जाती थी। आदमी लज्जा के मारे अपनी बेटी को बचपन ही में ज़िन्दा दफ़न कर देता था, और उस पर खर्च को बोझ समझता था जब कि अपनी मिलकियत में आई दासी अथवा लाभप्रद जानवर पर खर्च को बोझ नहीं समझा जाता था। और जो उसे जीवित रखते और बचपन में जीवन दान कर देते उनकी नज़र में उसकी क़ीमत मीरास की थी जो बाप से बेटों को हस्तांतरित होती थी और क़र्ज या सूद की अदायगी में उसे बेचा और रेहन रखा जा सकता था। वह इससे उसी समय बच सकती थीं जब वह किसी लब्ध प्रतिष्ठित कबीले की लड़की होती जिसकी हिमायत (समर्थन) और सन्निकटता को मान मर्यादा प्राप्त होती थी।

बुद्धमतः–

बुद्धमत में नारी के सम्बन्ध में विचारों का एक नमूना **"Encyclopedia of Religion and Ethics" (Vol. V.P. 271)** के लेखक ने एक बुद्ध विचारक **Chullavagga** के कथन से प्रस्तुत किया है जिसे **Oldenberg** ने अपनी पुस्तक **Buddha** जो **1906** में प्रकाशित हुई, के पृष्ठ **169** पर नक़ल किया है–

''पानी के अन्दर मछली की, समझ में न आने वाली, आदतों की तरह नारी का

स्वभाव भी है। उसके पास चोरों की तरह अनेक हथकँडे हैं और सच का उसके पास गुज़र नहीं।''

हिन्दू धर्म :-

उपरोक्त इनसाइक्लो--पीडिया (विश्वकोष) में नारी के सम्बन्ध में हिन्दुओं के विचार के बारे में लिखा है:-

''ब्रह्ममनिज्म में विवाह को बड़ा महत्व प्राप्त है। हर व्यक्ति को शादी करना चाहिए। लेकिन मनु के धर्मशास्त्र के अनुसार पति पत्नी का स्वामी है उसे अपने पति को नाराज़ करने वाला कोई काम नहीं करना चाहिए। यहां तक कि वह अगर दूसरी महिलाओं से भी सम्बन्ध रखे अथवा मर जाये तब भी किसी दूसरे पुरुष का नाम अपनी ज़बान पर न लाये। अगर वह दूसरा विवाह करती है तो वह स्वर्ग से वंचित रहेगी जिसमें उसका पहला पति रहता है। पत्नी के अपतिवृता होने की दशा में उसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। औरत कभी भी आज़ाद नहीं हो सकती। वह तर्का नहीं पा सकती। पति के मरने पर अपने सबसे बड़े बेटे के अधीन जीवन व्यतीत करना होगा। पति अपनी पत्नी को लाठी से भी पीट सकता है।''

''यूनीवर्सल हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड'' में रे स्ट्रेची हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में लिखता है:-

''ऋग्वेद में (जिसमें मानव के पूर्वजों की कहानियाँ भी हैं) नारी को तुच्छ स्थान दिया गया है। बाद में यह समझा जाने लगा कि वह आध्यात्मिक रूप से अविश्वसनीय बल्कि लगभग आत्माविहीन है। और मृत्यु के पश्चात पुरुषों की नेकियों के बिना वह अमर नहीं हो सकती। उसकी सारी आशाओं को समाप्त करने वाले धर्म के साथ रीति-रिवाज की बेड़ियों ने (जो धीरे-धीरे पैदा होती गयीं) यह असम्भव कर दिया कि औरत किसी विशिष्ट व्यक्ति को जन्म दे सके। नारी को जन्म देने वाले मनु ने उन्हें अपने घर, बिस्तर, ज़ेवर की महब्बत, वासना, क्रोध, बेईमानी और दुराचरण प्रदान किये। नारी इतनी ही बुरी है जितना कि झूठ। यह एक अकाटय सत्य था। नारी के जन्म-जात स्वभाव में है कि वह पुरूषों को इस दुन्या में ग़लत रास्ते पर डाले। इसलिए बुद्धिमान नारी से संग निश्चित हो कर नहीं बैठते।

बाल विवाह, विधवाओं से नफ़रत, सती और पर्दा एक ऐसे समाज के अनुकूल हैं जिसमें नारी का महत्व बच्चे जनने वाली से अधिक नहीं। सम्भवतः नवजात लड़कियों की मौत एक ऐसी दुन्या में उनके लिए वरदान है जिसमें उसे सन्दिग्ध, बुराई का स्रोत, धोखाबाज, स्वर्ग के रास्ते का रोड़ा और नर्क का द्वार समझा जाता है।''

चीन:-

रे स्ट्रेची चीन में औरत की हैसियत के बारे में लिखता है:-

''सुदूरपूर्व अर्थात चीन में हालात इससे बेहतर न थे। छोटी लड़कियों के पैरों को काठ मारने की प्रथा का उद्देश्य यह था कि उन्हें बेबस और नाज़ुक रखा जाये। यह प्रथा यद्यपि ऊँचे और मालदार घरानों में प्रचलित

शेष पृष्ठ .....21....पर

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना ग़ुलाम रसूल मेहर —प्रस्तुतिः मु0 ग़ुफ़रान नदवी

हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहू

मिस्र का प्रबंधः–

हज़रत अली रज़ि0 ने ख़लीफ़ा बनते ही मिस्र पर क़ैस बिन सअ़द अन्सारी रज़ि0 को हाकिम बना कर भेजा, उन्होंने उचित ढंग से काम लेकर हर मुक़ाम पर लोगों से बैअत (आज्ञाकरी प्रतिज्ञा) ले ली, केवल एक बड़ा विवाद रह गया, वहां के लोगों ने कहा, झगड़ा ख़त्म हो जाये तो हम से बैअत ले लीजिए ख़िराज (राजस्व कर) लेते जाइये, हज़रत क़ैस रज़ि0 ने यह बात मान ली।

अमीर मुआविया रज़ि0 ने क़ैस रज़ि0 को अपने साथ मिलाना चाहा, उन्होंने इनकार कर दिया, अमीर मुआविया रज़ि0 ने एक अजीब तदबीर अपनाई, खुद अफ़वाह उड़ा दी कि क़ैस रज़ि0 मेरे साथ हैं, हजरत अली रज़ि0 के मुशीरों (परामर्शदाताओं) ने यह बात कही कि फ़लां इलाक़े से अब तक बैअत नहीं ली गई, हज़रत अली रज़ि0 भी प्रभावित हुए और हुक्म दिया कि इस इलाक़े वालों से जंग की जाये, क़ैस रज़ि0 ने इस्तीफ़ा दे दिया, हज़रत अली रज़ि0 ने मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ि0 को मिस्र का गवर्नर बना दिया, उन्होंने जाते ही इलाक़े वालों से जंग छेड़ दी, अमीर मुआविया रज़ि0 ने इस हालत से फायदा उठा कर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 को मिस्र भेज दिया, मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ि0 ने शिकस्त खाई और मिस्र पर हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 का कबज़ा हो गया।

शहादतः–

यह हालात थे जब ख़ारजियों ने हज के मौक़े पर जमा हो कर ख़ुफ़या ख़ुफ़या फ़ैसला किया कि जब तक अली, मुआविया और अम्र बिन आस रज़ि0 ज़िन्दा हैं इस्लामी दुन्या को ख़ानाजंगी से नजात न मिलेगी इन तीनों का ख़ातिमा कर देना चाहिए। तीन खारजियों ने एक एक के ख़ातिमे का ज़िम्मा उठाया, हज़रत अली रज़ि0 को ख़त्म करने के लिए हज़रत अली रज़ि0 पर ''कूफ़ा'' में वार हुआ, सर पर सख़्त ज़ख़्म लगा, तलवार ज़हर में बुझी हुई थी, ज़हर सारे बदन में फैल गया।

20 रमज़ान सन 40 हिज़री (27, जून सन् 661 ई0) की रात को दरवेशी और बहादुरी का यह रोशन सूरज हमेशा के लिए डूब गया।

ख़िलाफ़त का ज़मानाः–

हज़रत अली रज़ि0 केवल 4 वर्ष और 9 महीने ख़िलाफ़त की मसनद पर बैठे, यह सारा ज़माना आपसी झगड़ों और लड़ाइयों में

गुज़रा, झगड़े न होते तो यक़ीन था कि ख़िलाफ़त के कामों में पहली इस्लामी शान पैदा हो जाती, आप रिआ़या के साथ बड़ी शफ़क़त दया और प्रेम फ़रमाते थे, साधारण जनता के आराम व सुकून का बहुत ख़्याल करते थे, दीनी मुआ़मलात में कभी किसी की रिआ़यत न बरती, सबसे हक़ व इन्साफ़ का बरताव किया फ़रमाया करते थे कि बैतुल माल से ख़लीफ़ा को दो पैमाने ग़ल्ला लेने का हक़ है, एक अपने और कुंबे के गुज़ारे के लिए, दूसरा महमानों के लिए, सादगी उम्र भर कायम रही, जंग जमल के बाद कूफ़ा पहुंचे तो आप के लिए महल खाली कर दिया गया, आप मैदान में ठहर गए, और फरमाया मेरे लिए यही ठीक है, ग़ैर मुस्लिमों के अधिकारों का बहुत ख़्याल रखते, कभी कभी बाज़ारों में निकल जाते और रेट या नाप तौल में लोगों को दियानतदारी सत्य निष्ठा का उपदेश देते।

हज़रत अजी रज़ि0 का जीवन चरित्रः-

हज़रत अली रज़ि0 ने बचपन से रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगरानी में तरबियत पाई, इस वजह से आप की ज़ात, अख़लाक़ नबी सल्ल0की तस्वीर बन गई थी, शुरु की ज़िन्दगी तंगी की थी, उस ज़माने में भी जुहद (संयम) की यह हालत थी कि एक मरतबा रात भर मज़दूरी कर के कुछ जौ लाये उनके तीन हिस्से कर लिये, तीनों मरतबा हलवा बनवाया, खाने बैठे तो मांगने वाले आ गये और तीनों मर्तबा हलवा उठा कर मांगने वालों को दे दिया, खुद अल्लाह की याद में लग गये, फिर अल्लाह की रहमत से आमदनी बहुत बढ़ गई लेकिन उस ज़माने में भी कुशादा दिली (उदार हृदय) से अल्लाह की राह में ख़र्च करते कि कभी कभी फ़ाक़ों की नौबत आ जाती इल्म व फ़ज़्ल, अमानत व दियानत, इबादत व बहादुरी का आप एक पाक साफ़ और मुकम्मल नमूना थे।

न्याय चित्रः-

एक मरतबा अमीर मुआ़विया रज़ि0 ने एक शख़्स से कहा कि हज़रत अली रज़ि0 की विशेषताएं बयान करो उसने लम्बी तक़रीर की जिस का ख़ुलासा यह था वह हौसले के बलन्द थे, सच्ची बात कहते थे, उनके हर पहलू से इल्म के चश्मे फूटते थे, दुन्या से नफ़रत थी, रात की तन्हाई अच्छी लगती थी, मामूली लिबास और बहुत मामूली खाना पसन्द था, दीनदारों की इज़्ज़त करते थे, ग़रीबों को पास बिठाते थे, कमज़ोर उनके इन्साफ़ से मायूस नहीं होता था, ताक़त वाला उनकी मौजूदगी में लालच का मौक़ा नहीं पाता था।

यह विशेषताएं सुन कर हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि0 रो दिये और कहा ''ख़ुदा अबुल हसन (हज़रत अली रज़ि0) पर रहम करे, ख़ुदा की क़सम वह ऐसे ही थे।

ख़िलाफ़त हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुः–

प्रारम्भिक हालातः–

हज़रत इमाम हसन रज़ि0 हिजरत के तीसरे वर्ष रमज़ान के महीने में पैदा हुए, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नाम रखा, लगभग आठ वर्ष के थे जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुन्या से तश्रीफ़ ले गये, हज़रत अबू बक्र रज़ि0, हज़रत उमर रज़ि0 और हज़रत उस्मान रज़ि0 की ख़िलाफ़त का ज़माना इतमीनान से गुज़रा, सब रसूले पाक सल्ल0 के इस प्यारे को सर आँखों पर बिठाते थे, हज़रत उस्मान रज़ि0 की हिफ़ाज़त करते हुए ज़ख़्मी भी हुए, जमल और सिफ़्फ़ीन की जंगों में भी शरीक थे।

बैअ़ते ख़िलाफ़तः–

हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद लोगों ने हज़रत हसन रज़ि0 की बैअ़त की, अमीर मुआ़विया रज़ि0 से लड़ाइयां जारी थीं और हज़रत हसन रज़ि0 सोच रहे थे कि उन्हें क्यों कर बन्द किया जाये वह जानते थे कि हज़रत अली रज़ि0 ने लड़ाइयाँ हक़ की ख़ातिर और उम्मत की भलाई की ग़रज़ से शुरु की थीं, मगर आहिस्ता आहिस्ता लोगों में गरोह बन्दी की भावना पैदा हो गई थी, और उम्मत की ताक़त आपसी लड़ाई झगड़े में बरबाद हो रही थी, अमीर मुआविया रज़ि0 के मुक़ाबले के लिए तो निकले लेकिन अपने दिल में पक्का फ़ैसला कर चुके थे कि मौक़ा पाते ही ख़ुद ख़िलाफ़त से अलग हो जायेंगे, और आये दिन के ख़ून ख़राबे को ख़ात्म कर देंगे।

एक तक़रीर (सम्बोधन):–

''लोगो! मैं किसी मुसलमान की ओर से अपने दिल में कीना नहीं रखता, तुम को उसी नज़र से देखता हूं जिस नज़र से अपनी ज़ात को देखता हूं, मैं तुम लोगों के सामने एक राय को पेश करता हूं उम्मीद है उसे रद नहीं करोगे, जिस एकता और यकजेहती को तुम नापसन्द करते हो वह उस विरोध और भेदभाव से कहीं ज़ियादा अच्छा है जिसे तुम स्थापित रखना चाहते हो।''

दस्त बरदारी (परित्याग):–

बहर हाल इमाम हसन रज़ि0 न सुलह (संधि) की उचित शर्तें तै कर लीं बल्कि कहा जाता है कि अमीर मुआविया रज़ि0 ने एक सादा काग़ज़ पर दस्तख़त करके हज़रत इमाम हसन रज़ि0 को इख़्तियार दे दिया था कि जो शर्तें चाहे लिख लें, फिर अमीर ने ज़बानी भी उन शर्तों की तस्दीक़ कर दी, उसके बाद सबके सामने ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी (त्याग) का ऐलान कर दिया, इस मौक़े पर जो तक़रीर की, उसमें फ़रमाया–

''यह विषय (ख़िलाफ़त) हमारे और मुआविया रज़ि0 के बीच झगड़े का कारण बना हुआ है, दो ही सूरतें हो सकती हैं, या हम उसके हकदार हैं या मआविया रज़ि का हक़ है, मैं दोनों सूरतों में उसे छोड़ता हूं। उद्देश्य केवल यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में फूट बाक़ी न

रहे, और लोग आपस की लड़ाई और रक्त पात से बचे रहें।

इस तरह वह पेश गोई (भविष्यवाणी) पूरी हो गई जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन रज़ि0 के बारे में फ़रमाई थी कि मेरा यह बेटा सरदार है, ख़ुदा उसके ज़रिये से मुसलमानों के दो बड़े गरोहों में सुलह करायेगा।

ख़िलाफ़ते राशिदा ख़त्मः-

इमाम हसन रज़ि0 कुछ महीने ख़लीफ़ा रहे, उनकी दस्त बरदारी (परित्यागी) पर ''ख़िलाफ़ते राशिदा'' ख़त्म हो गई, और उस ख़िलाफ़त का आरम्भ हुआ जिसे मुलूकियत कहते हैं, अर्थात वह ख़िलाफ़त जिसका रंग ढंग रूप रेखा बाद शाही का था, बनू उमय्या , बनू अब्बास और उस्मानी तुर्कों की ख़िलाफ़त हर प्रकार से बादशाही थी, बनू उमय्या के ज़माने में अरबियत की रूह बाक़ी थी, बनू अब्बास के ज़माने में यह रूह भी नष्ट हो गई, और ठेठ अजमीयत आ गई।

हज़रत हसन रज़ि0 की सरीत (चरित्र):-

हज़रत हसन रज़ि0 दस्तबरदारी के बाद 9 वर्ष ज़िन्दा रहे, यह सारा ज़माना मदीना मुनव्वरा में गुज़ारा फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक मुसल्ले पर रहते फिर टेक लगा कर बैठ जाते और आने जाने वालों से मिलते, चाश्त की नमाज़ पढ़ कर उम्मुहातुलमोमिनीन के सलाम के लिए जाते, घर होते हुए फिर मस्जिद पहुंच जाते, ज़रूरत मन्दों की सहायता में कोई कसर उठा न रखते। फ़य्याज़ी दान शीलता का यह आलम था कि एक मरतबा अपने पूरे माल के दो हिस्से किये, एक हिस्सा ख़ुदा की राह में दे दिया।

एक मरतबा देखा कि एक शख़्स दस हज़ार दिरहम मांग रहा है, घर पहुंचते ही उसे दस हज़ार दिरहम भिजवा दिये।

शकल व सूरत में रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत मिलते जुलते थे।

रज़ियल्लाहु अन्हुम व रजू अन्हु

❖❖❖

इस्लामिक जीवन का.....

अल्लाह तआला हम सब को अपनी महब्बत और इताअत दे और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत और इताअ़त दे और जन्नत में प्रवेश दे।

आमीन।

याद रहे जो मुसलमान क़ब्र में दफ़्न हुआ उसकी रूह क़ब्र में नहीं आलमे बरज़ख़ में है लेकिन उसकी क़ब्र जब तक बाक़ी रहेगी उसकी क़ब्र से और उसकी रूह से सीधा सम्पर्क रहेगा कोई मुसलमान उसकी क़ब्र पर उसको सलाम करेगा तो उकसी रूह उसका सलाम सीधे सुनेगी। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की क़ब्रों की ज़ियारत की तालीम दी, हमको चाहिए कि जब कब्रिस्तान जाया करें तो क़ब्र वालों को सलाम करें उनके लिए मग़फिरत की दुआ करें, अपनी मौत याद करें, हमको चाहिए कि क़ब्र वालों को ईसाले सवाब किया करें।

❖❖❖

मदरसे, मुस्लिम उम्मत के लिए जीवन स्रोत हैं

—हज़रत मौलाना सै0 अबुलहसन अली नदवी रह0

अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली सबसे पहली कुरआन की आयत को ध्यान पूर्वक पढ़ये और ग़ौर कीजिए—

अनुवादः— *पढ़ये अपने पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को ख़ून के एक लोथड़े से बनाया, पढ़ते जाइये और आपका पालनहार सबसे ज़ियादा करम करने वाला है, जिसने क़लम से ज्ञान दिया, इन्सान को वह सिखाया जो वह जानता न था।*

(सूरः अलक़ 1—5)

एक उम्मी अनपढ़ क़ौम में— जिसको कुर्आन मजीद में ख़ुद कहा गया है यहूद की ज़बान से "लै—स—अलैना फ़िल उम्मीयीन सबील" सूरः आले इमरान 75, हम अरब के वासियों के साथ कोई मुआमला करें, कोई ज़ियादती करें, उनके माल पर क़ब्ज़ा करलें या अपहरण कर लें या उनको कष्ट पहुंचायें, हमसे कोई पूछ गछ नहीं होगी इसलिए कि वह जानवरों के हुक्म में हैं, जानवरों का अगर कोई इस्तेमाल करे, मार दे, तकलीफ़ पहुंचाये तो कोई हिसाब न होगा, एक ऐसी क़ौम जिसको उम्मीयीन (अनपढ़) के लक़ब से याद किया गया है और कुर्आन मजीद में उसका ज़िक्र करके उसको क़ियामत तक के लिए बाक़ी रखा गया है, एक ऐसे शहर में कि जहां क़लम ढूंढने से मिलता। मैं अरब इतिहास के अध्ययन की रोशनी में कहता हूं कि मक्का मुकर्रमा में शायद तीन चार घरों में क़लम मिल सकता, इससे ज़ियादा नहीं, एक ऐसी शख़्सियत पर एक ऐसे इन्सान कामिल पर और एक ऐसे अल्लाह के प्रिय बन्दे पर कि जो मानव जगत को नजात दिलाने के अल्लाह की ओर से भेजा गया है और जिसको इल्म के दरया बहाने हैं और इल्म के ख़ज़ाने ज़मीन से उगलवाने हैं, जिसको इल्म और ज्ञान को चरम सीमा तक पहुँचाना है वह स्वयं उम्मी (अनपढ़) है उस पर यह कुर्आन की आयतें नाज़िल होती हैं।

उम्मत का दामन इल्म से बांध दिया गयाः-

इस उम्मत के लिए मानो यह बात अल्लाह की ओर से निश्चित कर दी गयी है सूरः अलक़ की इन आयतों द्वारा जो पहली वही नाज़िल होती है उसमें न अक़ायद के विषय में कुछ कहा जाता है, न उन चीज़ों के विषय में जो बुन्यादी चीज़ें हैं जिन पर इस्लाम की बुन्याद क़ाएम है, न इबादात के संबंध में कहा जाता है और न वहां के रीति रवाज़ और न जाहिलयत के विरुद्ध कहा जाता है, वहां जो पहली बात कही जाती है, पहला शब्द जो बोला जाता है,

हज़रत जिब्रईल जिसको स्वयं अदा करते हैं, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अदा करवाना चाहते हैं, वह हैं ''इक़रा'' पढ़ये, यह एक आश्चर्य जनक बात है जो सोचने समझने वाले इन्सान को चिन्तन मनन पर आमादा करती है लेकिन जो चीज़ बार बार पढ़ी जाती है, और नज़र से गुज़रती है उस पर ध्यान नहीं दिया जाता, हालांकि सबसे पहले यही आयतें पढ़ी जाती हैं, इसी से शुरुआत होती है, इस उम्मत का दामन ''क़िरत'' पढ़ने से बांधा गया है जहां इल्म और अल्लाह के नाम को एक जगह एकत्रित किया गया है, दुन्या की बड़ी बदक़िसमती और बदनसीबी है कि यूरोप अमरीका और उन्नतिशील पच्छिमी देशों में इल्म का संबंध अल्लाह के नाम से कट गया, जिसकी वजह से इल्म, इल्म नहीं बल्कि वह अज्ञानता और मूर्खता है, जो इन्सान को ख़ुदा फ़रामोश बना देता है, यह दुन्या की बहुत बड़ी घटना है।

आज इल्म लाभदायक क्यों नहीं?:-

इसको मैंने पच्छिमी देशों में भी कहा कि इल्म जो आज लाभदायक नहीं हो रहा है, नफ़ाबख्श नहीं है वह इस वजह से कि इल्म, इल्म है, लेकिन इस्म, नहीं है अर्थात अल्लाह का नाम नहीं, अल्लाह तआ़ला ने इल्म को इस्म के साथ जोड़ा था, और दोनों का दामन बांध दिया था, और इल्म को इस्म के साथ संबंधित कर दिया था, जब इल्म, इस्म (नाम) से वंचित हो जायेगा, फिर वंचित ही नहीं बाग़ी हो जायेगा, तो वह इल्म जुल्म का दरया बहाने वाला और जुल्म की आग लगाने वाला बन जायेगा और जो कुछ फ़साद हमको आज यूरोप, अमरीका में नज़र आ रहा है वह सब इस वजह से कि इल्म का रिश्ता इस्म से कट चुका है और अब वह इल्म नहीं है जो इन्सानियत पैदा करे बल्कि वह इल्म है जो दरिन्दगी पैदा करे, इच्छा शक्ति पैदा करे।

मदरसे उम्मते मुस्लिमा के लिये आवश्यक क्यों?:-

जहाँ तक मुसलमानों का, उम्मते मुस्लिमा का तअल्लुक़ है उसका तो दामन बंधा हुआ है, उसके लिए तो शर्त है कि उसकी ज़िन्दगी का आरम्भ, उसकी चेतना वाली ज़िन्दगी की शुरुआत कम से कम ''इक़रा'' पढ़ने के अमल के साथ हो और इस्म के साये के नीचे हो, और वह उसकी सरपरस्ती (अभिमानी का) में हो, मार्गदर्शन में हो, जहां तक उम्मते मुस्लिमा, का तअल्लुक़ है, यह मदरसे उसके लिए जीवन स्रोत हैं, उसको इस्लाम के रास्ते पर डालने वाले हैं, इस्लाम को समझाने वाले हैं, इस्लाम पर अमल करने की तरग़ीब (प्रेरणा) देने वाले हैं।

एक ऐलानः-

जहां तक उम्मते मुस्लिमा का तअल्लुक़ है इल्म तो उसके लिए सांस की तरह है, रूह (आत्मा) की तरह है, लेकिन शर्त यही है

कि इल्म इस्मे इलाही (अल्लाह के नाम) से संबंधित हो उसकी संरक्षता में हो, फिर इन्हीं आयतों पर ग़ौर कीजिए, यह ग़ारे हिरा में नाज़िल हो रही हैं, उम्मी अनपढ़ नबी पर, उम्मी उम्मत पर, उम्मी शहर में नाज़िल हो रही हैं, इन आयतों में क़लम का भी ज़िक्र है, यह साफ़ पेशीनगोई थी कि यह उम्मत क़लम प्रयोग करने वाली होगी, क़लम से रहनुमाई और हिदायत का काम लेगी क़लम से उन ख़राबियों और बीमारियों को दूर करेगी जिनसे इन्सानियत पीड़ित है।

मदरसे उम्मते मुस्लिमा को ज़िन्दा रहने की एक शर्त हैः–

जहाँ तक मुस्लिम उम्मत का सवाल है, यह आज के हालात का तक़ाज़ा और मांग भी है कि यह बात साफ़ साफ़ कह दी जाये कि मदरसे मुस्लिम उम्मत के ज़िन्दा रहने की शर्त है, इसी से उम्मत की बक़ा और स्थिरता है, उम्मत का रिश्ता कभी इल्म से तोड़ा नहीं जा सकता और तोड़ा जाये तो टूट नहीं सकता, अगर तोड़ा जाये तो उम्मत की मौत होगी, यह मदरसे, शिफ़ा ख़ाने हैं जहां से सर्वकालिक जीवन का तोहफ़ा मिलता है, जहां से वास्तविक जीवन की नेमत मिलती है, जहां इन्सान का उसके स्वामी से संबंध स्थापित होता है। यूं समझये कि इन्सान दुन्या में आने और रहने का वास्तविक उद्देश्य समझता है, और जीवन को बहुमूल्य बनाता है।

यह मदरसे न केवल मुसलमानों के लिए ज़रूरी हैं बल्कि देश के लिए ज़रूरी हैं वहां की आबादी के लिए ज़रूरी हैं, वहां के भविष्य के लिए ज़रूरी हैं अगर वह देश आदमियों को देखना चाहता है कि आदमी आदमी की तरह रहे, आदमी भेड़िया न बन जाये, आदमी कुत्ता और सांप बिच्छू न बन जाये तो उसके लिए ज़रूरी है कि इस तरह के केन्द्र चाहे उनका नाम मदरसा रखिये, चाहे उनका नाम आप कुछ और रखिये, किसी ज़बान में रखिए, लेकिन हर हाल में ऐसे केन्द्रों की ज़रूरत है।

❖❖❖

नारी की प्रतिष्ठा .....

थी किन्तु इससे आसमानी हुकूमत काल में नारी की दशा पर रोशनी पड़ती है।''

इंग्लैंडः–

रे स्ट्रेची इंग्लैंड में नारी की प्रतिष्ठा के बारे में लिखता हैः–

''वहाँ उसे हर प्रकार नागरिक अधिकारों से वंचित रखा था। शिक्षा के द्वार उस पर बन्द थे। केवल मामूली मज़दूरी के अलावा वह कोई काम नहीं कर सकती थी और विवाह के समय उसे अपनी सारी सम्पति छोड़ देनी पड़ती थी। यह कहा जा सकता है कि मध्ययुग से उन्नीसवीं शताब्दी तक नारी को जो स्थान दिया गया था उससे किसी बेहतरी की आशा नहीं की जा सकती थी।''

❖❖❖

इस्लाम से नफ़रत क्यों ?

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

आज कुछ लोग महज़ इस बिना पर इस्लाम से नफरत करते हैं कि उन्हें इस्लाम को अपनाने में अपना इक़्तिदार और बालादस्ती, अपने माद्दी अग़राज़ और ज़ाती मफ़ादात को ख़तरा महसूस होता है, हालांकि यह ख़्याल निहायत ही ग़लत है, और यह लोग सख़्त धोखे में हैं। इस्लाम हरगिज़ हरगिज़ इन्सानी हुकूक़ पर जुल्म नहीं करता और न उस की सलाहीयत पर कोई बन्द लगाता है, इस्लाम हर इन्सान को उस का पूरा हक़ देता है, उसके मक़ाम व मर्तबा का लिहाज़ करते हुए तवाजुन व एतिदाल के साथ अख़्लाक़ी और इज्तिमाई तालीमात की रौशनी में उसे उस का हक़ फराहम करता है, इस्लाम उन खुद साख़्ता निज़ामों और इन्सानी क़वानीन से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है कुछ लोग इन्सान की ताक़त और उसकी जिन्दगी का निहायत गलत इस्तेमाल करते हैं, और उस का इस क़द्र इस्तेमाल करते हैं कि मुसीबत ज़दा रह कर दुन्या से चला जाता है। लेकिन आक़ाओं के घरों में दौलत के चश्मे बह रहे होते हैं, जिस निज़ाम में किसी मख़सूस तबक़ा के एक एक फर्द को हुकमरानी सौंप दी जाती है और उसे पूरा इख़्तियार फराहम कर दिया जाता है कि वह अपनी ख़्वाहिश और मर्ज़ी लोगों पर थोपता रहे, ख्वाह वह मुनतख़ब हाकिम, बदनाम ज़माना ही क्यों न हो और अपने सियाह कारनामों के साथ शोहरत रखता हो, वह निहायत बे बाकी के साथ मुल्क की सारी दौलत के दहाने अपनी ख़्वाहिश की जानिब फेर लेता है, और दिलचस्प बात तो यह है कि यह सब जम्हूरियत के खुशनुमा नाम से किया जाता है।

यह दौरे हाज़िर की जम्हूरियतें, आमरियतें और सैकुलरिज़्म क्या है? कुदरत से बगावत करने वाले इंसानी घरौंदे, जिन का अंजाम बिल आखिर तबाही है, जो ऐसे ढाँचे हैं जिनका जाहिर तो खुशनुमा लेकिन अंदरून चंगेज़ से तारीक तर, उन तमाम इंसानी निज़ामों के दोज़ख निहायत खुशनुमा, रौशन और चमकदार होते हैं, सादा लौह अवाम और भोले भाले, इन्सान उन के ज़ाहिरी चमक दमक को देख कर फरेब खा जाते हैं और उसके भक्त व हामी बन जाते हैं, दूसरा रुख निहायत बद नुमा और तारीक होता है, उस पर ज़ाहिर दारियों का परदा पड़ा होता है, और खुफ़या मवाके पर वह अपना काम करते हैं, यह दूसरा रुख ही इस का हक़ीकी चेहरा है। इसी के इरादों का वह पाबन्द होता है, यह चेहरा कैसा है? नाजाइज़ नफा अंदोज़ी का चेहरा, जुल्म का चेहरा और हर क़िस्म का चेहरा, लेकिन यह चेहरा नुमायां नहीं होता, लोग इस चेहरे से वाक़िफ नहीं हो पाते और अक्सर औक़ात तो उस की शनाख़्त भी मुश्किल होती है।

इस्लाम इस मौक़े पर सामने आता है, और इस

बदनुमा, तारीक और मुजरिमाना चेहरे से नक़ाब उठा देता है, फिर दुन्या देख लेती है कि इस चेहरे का क्या हाल है, इस पर अनानीयत, नाजाइज़ कमाई और नफा अंदोज़ी व जराइम के कितने दाग लगे हुए हैं, इस्लाम इंसान की हक़ीक़ी तस्वीर अस्ली रूप नज़रों के सामने पेश कर देता है, वह एलान करता है कि अल्लाह तआला ने इंसान को तो वह मक़ाम बुलन्द अता किया है जिसमें कोई दूसरी मख़लूक़ उस की शरीक नहीं, अल्लाह तआला का इरशाद है :— (यक़ीनन हम ने औलाद आदम को बड़ी इज़्ज़त दी, और उन्हें खुशकी और तरी की सवारियाँ दीं और उन्हें पाकीजा चीज़ों की रोज़ियाँ दीं और अपनी बहुत सी मख़लूक़ पर उन्हें फज़ीलत अता फरमाई)।

(बनी इस्राईलः 70)

इस्लाम तमाम इंसानों को एक सफ़ में ख़ड़ा करता है और उनके दिलों में यह हक़ीक़त नक़्श कर देता है कि सारी इन्सानियत एक आदम की औलाद है, और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िल्क़त मिट्टी से हुई थी, यह हक़ीक़त भी उनके दिलों में बिठा देता है कि फजीलत व बरतरी का मेयार सिर्फ तक़वा है, अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ किसी के मर्तबा को ऊँचा करने का ज़रीआ न बन सके तो फिर किसी अरबी को अज़मी पर या अजमी को अरबी पर, इसी तरह किसी काले को गोरे पर या किसी गोरे को काले पर किसी किस्म की फ़ौक़ीयत हासिल नहीं खुदाए जुलजलाल ने अपनी ला फानी किताब मुकद्दस में यह हकीक़त खोल कर बयान कर दी है फरमायाः—

(ऐ लोगो! हम ने तुम सब को एक ही मर्द व औरत से पैदा किया है, और इसलिए कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो, कुंबे और क़बीले बना दिए हैं, अल्लाह के नज़दीक तुम सब में बा इज़्ज़त वह है जो सबसे ज़ियादा अल्लाह से डरने वाला हो, यक़ीन मानो कि अल्लाह दाना और बा ख़बर है)।

इस इस्लामी मसावात के नतीजे में जब तमाम इंसान एक मक़ाम व मर्तबा पर खड़े नज़र आते हैं और मेयार फज़ीलत महज तक़वा क़रार पा जाता है तो इस्लाम हर इन्सान को अक़ीदे व किरदार की बुन्याद पर अपनी सीरत की तामीर के मुकम्मल मवाक़े फराहम करता है, और यही नहीं बल्कि अपनी क़बाए किरदार को आरास्ता करने के लिए फज़ाइल व महासिन के ज़रीं तुक्मे भी मुहैय्या करता है और सीरत को दागदार बना देने वाली छोटी बड़ी तमाम चीज़ों से मुतनब्बेह कर देता है, कुर्आने हकीम इस कीमती हिदायत को इन अल्फ़ाज़ में बयान करता है—

(और तुम्हें जो कुछ रसूल दे ले लो, और जिस से रोके रुक जाओ)।

गोया इस्लाम ने पैग़म्बरे इस्लाम की मुबारक ज़िन्दगी की सूरत में एक मुकम्मल आईडियल फराहम कर दिया है, आप की जामे हयात तय्यिबा के हर गोशा में रहनुमाइयाँ बिखरी हुई हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सरीत, अख़्लाक़, आमाल व अक़वाल, इरशादात और अहकामात ग़रज़ मुख़्तलिफ़ सूरतों में निहायत वजाहत और तफ़्सील के साथ तालीमात

व हिदायात दी गई हैं, कुर्आन का इरशाद है–

(यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में उम्दा नमूना (मौजूद) है, हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है, और बकसरत अल्लाह को याद करता है)।

(अहज़ाबः 21)

इस पाकीजा सीरत के साँचे में ढलने और इस उस्वा नमूना को जिन्दगी के हर गोशा में अपना लेने के बाद सच्ची कामयाबी और सआदत यक़ीनी है, इस नमून–ए–ज़िन्दगी और पैकरे हयात के सामने आने के बाद कोई भी इन्सान इस्लाम से नफ़रत नहीं कर सकता, उसके हाशिए ख़्याल में भी इस्लाम बेज़ारी का कोई नक़्श नहीं उभरेगा, क्योंकि इस्लाम की यह अमली तस्वीर उसका सच्चा रूप और इंसानी फितरत की मता–ए–गुमशुदा है, इन्सान अपनी तबीअ़त व फितरत के ऐन तक़ाज़ों को पा कर एक कैफ़ व लज़्ज़त महसूस करता है, एक रूहानी सुरूर जिस का इज़हार अल्फ़ाज़ में नहीं किया जा सकता, इस जौहरे नायाब को पा लेने के बाद क्यों किसी इन्सान को कोई डर और ख़ौफ़ महसूस होगा और क्यों उसे दो रुखा पन इख़्तियार करने की ज़रूरत पेश आएगी, वह मुनाफिक़ाना रवय्या की मौके व मंफअत के लिहाज़ से एक चेहरा को जाहिर करे और दूसरे को छिपा ले, उसे चंद खनखनाते सिक्के और उहदा, कुर्सी, अपना असीर नहीं बना पाते, वह अपनी मामूली अग़राज़ की खातिर जमहूरियत, इश्तिराकियत और सैकुलरिज्म के झूठे नारों के हथियार इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता।

वाक़िआ है कि इस्लाम के साया तले इंसान को सुकून व मसर्रत और क़ल्बी शादमानी की अजीब और अज़ीम दौलत नसीब होती है, एक अंदरूनी फरहत व इत्मीनान उसे बेखुद किए रहता है।

उसके शब व रोज़ अम्न व आफ़ियत के साए में बसर होते हैं, उन खुशियों में नहाल हो कर उहदा व कुर्सी और माल व दौलत को भुला देता है, बल्कि अगर यह चीज़ें उसके क़दमों पर आ कर गिरती भी हैं तो वह उन्हें कमाल बे नियाज़ी से ठुकरा देता है, ज़िन्दगी की उलझनों में उलझ कर वह अपनी पुर सुकून ज़िन्दगी की मसर्रतों को बे मज़ा नहीं करना चाहता, अगर कुछ क़बूल करता भी है तो महज़ रब को खुश करने और ज़मीर मुतमइन करने की ख़ातिर, अपनी दीनी और ईमानी ज़िम्मेदारियों को अंजाम देने की ग़रज़ से और अपने फराइज़ को अदा करने के मक़सद से।

ऐ काश! आज लोगों ने उन तालीमात और उन बेमिसाल हिदायात की रौशनी में इस्लाम को समझा होता, इस्लाम के ख़िलाफ़ फैलाये जाने वाले झूटे परोपगण्डों, अफ़वाहों और बेजा ख़ौफ़ के दबीज़ परदों को अपने ज़हन व दिमाग़ से नोच कर फेंक दिया होता और फिर बसीरत की बे दाग रौशनी में हक़ीक़त तक पहुँचने की कोशिश करते।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अपने ऐबों को छिपाना और दूसरों के ऐबों को खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर करना और मीडिया में देना या फेस बुक पर लिख देना शर्अ़न कैसा है?

उत्तरः दूसरों को ज़लील व रुसवा करने के लिए ऐबों को जाहिर करना, उछालना बड़ा गुनाह और सख़्त मआ़सियत है, हदीसे नबवी में है कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ऐब जोई और पर्दादारी करता है अल्लाह पाक उस को रुसवा करता है और उस का ऐब जाहिर करता है, अगर्चे वह अपने मकान में छिप कर ऐब का काम करे। (जमउल फवाइदः 2/251)

दूसरी हदीस में है कि मुसलमान की आबरूरेज़ी बदतरीन सूद है। (मिशकातः 2/429)

प्रश्नः जो शख़्स अपनी बात को ऊँची रखे और दूसरों की बात को नीची करने की कोशिश करे वह इस्लाम की नज़र में कैसा है?

उत्तरः अगर अपनी अना और बड़ेपन को साबित करने के लिए ऐसा करे तो इस्लाम की नज़र में यह घमण्ड है जो संगीन गुनाह है, हदीस में आता है कि अल्लाह जमील है, जमाल को पसन्द करता है, हक़ को क़बूल न करना और लोगों को नीचा दिखाना किब्र है। (मिशकातः 2/433)

प्रश्नः बाज़ अहकाम शरई ऐसे होते हैं कि अगर उन पर अमल किया जाये तो बाज़ लोग बुरा समझते हैं मसलन सुन्नत के मुताबिक दाढ़ी रखने, पाएजामा टखने से ऊपर रखने, सादा अंदाज़ में शादी ब्याह करने को मुसलमानों का जदीद तालीम याफ़्ता तबक़ा पसंद नहीं करता तो क्या इन का ख़्याल करते हुए उन अहकाम से बे तवज्जुही बरती जा सकती है?

उत्तरः अहकाम शरई पर अमल करने को कम इल्म और कम दीन वाले हक़ीर समझते हैं, इस में उनका नुक़्सान है और जो लोगों की परवाह किए बग़ैर अहकाम शरई और दीन पर अमल करते हैं, अल्लाह के नज़दीक उनकी इ़ज़्ज़त होगी दीन से गाफिल रहने वालों का ख़्याल करते हुए अहकाम शरई पर अमल न करना नादानी है, इससे इ़ज़्ज़त हासिल नहीं होती है, इ़ज़्ज़त तो दर अस्ल अल्लाह की तरफ़ से मिलने वाली इ़ज़्ज़त है, अल्लाह तआ़ला फरमाता है "क्या उनके पास मुअ़ज़्ज़ज़ होना चाहते हैं सो इ़ज़्ज़त तो अल्लाह के क़ब्ज़ा में है।"

प्रश्नः बाज़ लोग गुफ़्तगू में दूसरों के ख़िलाफ़ बोलने में इस हद को पहुंच जाते हैं कि जो लोग दुन्या से चले गए उनकी भी बुराई करने लगते हैं कहते हैं कि जिन्होंने खुले तौर पर बुरा किया और वह दुन्या से चले गए तो उनकी बुराई बयान करने में कोई हरज नहीं क्योंकि यह गीबत नहीं है, क्या ऐसे लोगों का यह ख़्याल दुरुस्त है? शरीअ़त इस्लामी क्या कहती है?

शेष पृष्ठ .....29....पर

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

एक दूसरे को देखने की इजाज़तः—

शादी के उल्लेखित मकसदों में इंसानी चाहत और उसकी भावनाओं का आदर बहुत महत्व रखता है, इसलिए प्राकृतिक धर्म इस्लाम ने यह भी इजाज़त दी है कि शादी से पहले दोनों एक दूसरे से ज़रूरी मालूमात हासिल कर लें ताकि हर क़दम सोच समझ कर और विचार विमर्श के बाद उठे और किसी को पछताना ना पड़े, इसी वजह से, बावजूद इसके कि शरीयत में अजनबी मर्द का औरत को देखना मना है, निकाह से (बल्कि पैग़ाम देने से) पहले मर्द को इजाज़त दे दी गयी है कि जिस औरत से शादी का इरादा है, अगर चाहे तो उसे देख सकता है, नबी—ए—अकरम (स०) ने फ़रमाया :— ''जब तुम किसी औरत को निकाह का पैग़ाम दो (या देना चाहो) तो अगर यह संभव हो कि उसके वे गुण देख सको जो शादी के लिए चाहिये तो ज़रूर ऐसा करलो। ''(अबू दाऊद जिल्द 1, पृष्ठ 284) इसके अलावा सही हदीस में जिसे मशहूर मुहद्दिस इमाम मुस्लिम (रह०) ने अपनी किताब ''सहीह मुस्लिम'' में जगह दी है एक वाक़िया यह आता है।

''एक साहब ने हुज़ूर (स०) की सेवा में उपस्थित हो कर कहा कि मैं ने एक अंसारी औरत से शादी (करने का इरादा) कर लिया है, इस पर आप ने फ़रमाया कि मियाँ! उसे देख भी लिया है? क्योंकि अंसारियों की आँख में आम तौर से कुछ (कमी) होती है।''

(सहीह मुस्लिम जिल्द 1 पृष्ठ 457)

इस वाक़िये से यह भी मालूम हुआ कि दोनों में से किसी में भी अगर कोई ऐब हो, जो बाद में गुस्सा और सम्बन्धों के खराब करने का कारण बन सकता हो, उससे अवगत करा देना चाहिए ताकि नापसन्दीदगी पहले ही ज़ाहिर हो जाए, इसके बावजूद भी शादी के लिए राज़ी है तो फिर शिकायत न होगी, और यह ऐब संबंधों में तनाव का कारण नहीं बनेगा।

इस हदीस की व्याख्या करते हुए मशहूर हदीस के व्याख्याकार अल्लामा नववी (रह०) ने बहुत अच्छी बात लिखी है, जनाब का कहना है कि देखने और पसंद करने का काम पैग़ाम देने से पहले होना चाहिए और इस तरह होना ज़ियादा मुनासिब होगा कि लड़की और उसके अभिभावकों को पता न चले, ताकि पसंद न आने की स्थिति में लड़की और उसके ज़िम्मेदारों की बेइज़्ज़ती और बदनामी ना हो, और उन्हें तकलीफ ना पहुंचे फ़रमाते हैं:—

औरत से देख लेने की इज़ाज़त लेना ज़रूरी नहीं, क्योंकि वह अक्सर (इज़ाज़त देने में) शर्माती है और इसमें मानो एक तरह की सज़ा भी है कि देखने के बाद पसंद न

आयी, और शादी नहीं की तो उसका दिल टूटेगा और वह तकलीफ़ महसूस करेगी, इसलिए हमारे उलमा ने कहा है कि पैग़ाम देने से पहले ही देखना बेहतर है, ताकि अगर शादी नहीं हुई तो भी उसे कोई ख़ास तकलीफ़ नहीं पहुंचेगी, इस के विपरीत जब पैगाम देने के बाद छोड़ेगा तो बहुत तकलीफ़ पहुंचेगी।

मंगेतर को देखने की इजाज़त का एक रोचक वाक़िया हदीस की किताबों में यह भी मिलता है। हजरत मुग़ीरा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (स०) के पास आ कर एक औरत को पैग़ाम देने का इरादा ज़ाहिर किया, आपने फ़रमायाः— पहले जा कर देख लो, क्योंकि इससे सम्बन्ध अच्छे करने में बहुत मदद मिलेगी, हज़रत मुग़ीरा कहते हैं कि मैं उसके घर गया और उसके माँ—बाप को पैग़ाम दिया, उसी के साथ हुजूर (स०) का मश्वरा सुनाया, इस से उन दोनों को कुछ बुरा लगा, लेकिन उस औरत ने परदे के पीछे से यह बात सुन ली, उसने कहा कि अगर अल्लाह के रसूल ने तुम्हें देखने का हुक्म दिया है तो ज़रूर देख लो, वरना समझ लो कि (बहुत बुरी बात होगी), अतः उन्होंने देख कर शादी की फिर वह सम्बन्ध बहुत अच्छे रहने का ज़िक्र किया करते थे।

(इब्ने माजह, पृष्ठः135)

सुनन इब्ने माजह ही की एक हदीस में यह वाकिया भी है कि एक सहाबी मुहम्मद बिन सलमा ने अपनी मंगेतर को पेड़ की आड़ में हो कर देख लिया, जब पता चला तो उसको बहुत बुरा समझा गया और उनसे कहा गया कि तुम ने सहाबी हो कर ऐसी हरकत की, इस पर उन्हों ने जवाब दिया, हुजूर (स०) ने मंगेतर को देखने की इजाज़त दी है। (पृष्ठ 135) इसी से मिलता जुलता एक वाक़िया (छुप कर देखने का) अबू दावूद शरीफ़ में भी है।

(पृष्ठ 284,जिल्द—1)

मंगेतर का कितना बदन देखा जा सकता हैः—

इन सही और स्पष्ट हदीसों की बिना पर लगभग तमाम उलमा मंगेतर को देखने की इजाज़त देते हैं बल्कि कुछ उलमा (जैसे इब्ने हज़्म ज़ाहिरी) ने तो इस बारे में इतनी गुंजाईश रख दी है कि उनके नज़दीक मंगेतर का पूरा बदन देखना जायज़ है। लेकिन अधिकांश उलमा सिर्फ चेहरे और हथेलियों का देखना जायज़ क़रार देते हैं।

इब्ने हजर (रह०) लिखते हैं :— अधिकांश उलमा कहते हैं कि मंगेतर को देखने में हरज नहीं, मगर चेहरा और हथेलियों के अलावा कुछ और ना देख, इसके लिए औरत से इजाज़त लेने की भी ज़रुरत नहीं, हाँ इमाम मालिक (रह०) कहते हैं कि औरत से इजाज़त ले कर ही चेहरा और हथेली देखे। लेकिन जैसा कि ऊपर गुजरा, देखने की कोशिश उस वक़्त करनी चाहिए जब औरत या उसके अभिभावकों को बुरा न लगे या दिल पर बोझ ना बने, और देखलेना आसानी से संभव भी हो, वरना बेहतर तरीक़ा यह है कि किसी

समझदार भरोसे के लायक़ और सही राय देने वाली, अच्छा यह हो कि रिश्तेदार औरत को लड़की के घर भेज दिया जाये, वह तमाम हालत की समीक्षा कर के और संभव हो तो लड़की को देख कर जो राय दे उसके मुताबिक़ फैसला कर के अमल किया जाए, क्योंकि यही तरीक़ा एक अवसर पर नबी–ए–अकरम (स०) ने अपनाया था, जैसा कि अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी (रह०) ने बैहक़ी और मुसतदरक वगैरह के हवाले से लिखा है :–

नबी–ए–अकरम (स०) ने एक औरत से शादी का इरादा किया तो एक औरत को भेजा ताकि वह ''अच्छी तरह'' देख भाल कर आए। ''बजलुल मजहूद शरह अबू दाऊद'' के हाशिये में इमाम शाफई (रह०) की बात लिखी गयी है कि लड़की को लड़का खुद देख ले यह ज़ियादा अच्छा है।

(बजलुल मजहूद पृष्ठ 78, जिल्द 10)

इंसानी भावनाओं का लेहाजः–

इसे भी इंसानी भावनाओं के लेहाज ही का नाम देना चाहिए कि विधवा और तलाक याफ़्ता के मुकाबले आप (स०) ने ऐसी औरत से शादी करना ज़ियादा बेहतर बताया जिस की अबतक शादी ना हुई हो, प्राकृतिक झुकाव की रियायत के अलावा यह मस्लेहत भी है कि शादी के मक़सद के एतेबार से ऐसी औरत से शादी आमतौर पर ज़ियादा फायदेमंद और पूर्ण रूप से मुनासिब रहती है, कुछ मसलेहतों की तरफ़ हदीस शरीफ़ में मार्गदर्शन किया गया हैः–

रसूलुल्लाह (स०) ने फरमायाः–"कि कुंवारी लड़कियों से शादी किया करो। क्योंकि वे मीठी ज़बान होने के साथ साथ संतान उत्पत्ति की ज़ियादा योग्यता रखतीं हैं, और थोड़े पर राजी हो जातीं हैं,'' एक हदीस में यह भी है कि वे दांव–पेंच कम जानती हैं और पति का गर्मजोशी से स्वागत करती हैं।

(इब्ने माजह, पृष्ठः135)

इन मसलेहतों के अलावा लोगों के अनुभव भी इस पर गवाह हैं कि ऐसी औरत से निबाह भी आसान होता है, और उसको किसी खास शैली या अपने मिजाज के अनुसार ढाल लेना और मुनासिब तरबियत कर लेना भी ज़ियादा आसान है और पति से दिली सम्बन्ध भी आम तौर पर उसको ज़ियादा होता है क्योंकि आम तौर पर औरत को दिली लगाव एक ही से हुआ करता है, इसके अलावा यह कि विधवा और तलाक़ याफ़्ता औरतों के मुक़ाबले में कुंवारी लड़कियों की संख्या ज़ियादा होती है और उनकी भावनाओं की प्रचुरता और अनुभवहीनता के कारण फ़ित्ने में लिप्त हो जाना और नफ़्स की हवस का शिकार हो जाना ज़ियादा आसान होता है। यही वजह है कि अभिभावकों को कुंवारी लड़कियों की शादी की जितनी चिंता होती है उतनी तलाक याफ़्ता या विधवा की नहीं होती क्यों कि उनकी भावनाएं आमतौर से ठंडी हो चुकी होती हैं, इसी वजह से पति की इच्छा उनमें ज़ियादा नहीं होती,

बल्कि कभी कभी तो बिना पति के ज़िन्दगी गुज़ारने में ही वे राहत समझती हैं, इन्हीं सब कारणों की वजह से ग़ैर शादी शुदह लड़कियों से शादी के लिए प्रेरित करना और इसके लिए दूसरों को तैयार करना ज़रूरी था अतः आप (स०) ने ऐसा ही किया, लेकिन इससे यह नतीजा निकालना सही न होगा कि व्यक्तिगत हितों और निजी जरूरतों, या कभी कभी किसी दीनी या राष्ट्रीय आवश्यकता से भी तलाक़ याफ़्ता या विधवा से निकाह करना वरीयता के लायक़ न होगा। (यह नतीजा निकालना कैसे सही हो सकता है जबकि इस सच्चाई से वाकिफ़ जानते हैं कि नबी–ए–अकरम (स०) की सारी बीवियां हज़रत आयशा (रज़ि०) के अलावा तलाक़ याफ़्ता या विधवा ही थीं, इस के अलावा यह हक़ीक़त भी सामने रहे कि विधवा विवाह खुद अपनी जगह कुछ मसलहतों की बिना पर अपेक्षित है जिससे तमाम जानकार लोग अवगत हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर .....

उत्तरः जो लोग बुराई करके दुन्या से चले गए उनकी बुराईयों को बयान करना भी गीबत है जो हराम है और मुर्दों की गीबत का गुनाह ज़िन्दों की गीबत से ज़ियादा सख़्त है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुर्दों को बुरा भला कहने से मना फरमाया और उनकी अच्छाईयाँ बयान करने का हुक्म फरमाया है।

प्रश्नः एक शख़्स ने दूसरे की गीबत की, अब उसे अपनी ग़लती का एहसास हो गया और वह मुआ़फ़ी माँगता है लेकिन जिस की गीबत की थी वह मुआ़फ करने के लिए तैयार नहीं है, ऐसी सूरत में तलाफ़ी की क्या शक्ल होगी?

उत्तरः तलाफ़ी का अस्ल तरीक़ा है कि जिसकी गीबत की थी, उससे मुआ़फ़ी माँगे और मुआ़फ़ न करे तो उनके साथ एहसान और उल्फ़त व महब्बत का मुआ़मला करे, इसके बावजूद न मुआ़फ करे तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, तौबा गीबत की तलाफ़ी कर देगी। (अह़याउ उलूमुद्दीनः 31/133)

प्रश्नः गुनहगार तौबा कर ले तो गुनाह मुआ़फ होता है या नहीं? तौबा के बाद उसको गुनहगार कहना कैसा है?

उत्तरः तौबा ऐसी चीज़ है जो गुनाह को ख़त्म कर देती है, अल्लाह तआ़ला अपने आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रीआ एलान फरमाता है "आप कह दीजिए ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर ज़ियादती की है, तुम अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम गुनाहों को मुआ़फ फरमा देंगे"। (सूरः जुमर) अहादीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में सराहत मिलती है कि सच्ची तौबा तमाम गुनाहों को ख़त्म कर देती है, तौबा के बाद किसी को गुनहगार नहीं कहा जाएगा, अगर कोई तौबा के बाद किसी को गुनाह का ताना दे तो हदीस में आता है कि वह ख़ुद इस गुनाह में मुब्तला हो जाता है।

❖❖❖

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कुर्आन की रोशनी में

—प्रस्तुतिः मुहम्मद गुफ़रान नदवी

रात ने जब दामन फैलाया चर्ख़ पे इक तारा चमकाया
तारा चमका, दिल को भाया आप ने देखा और फ़रमाया
इस का यह मतलब है शायद
यह तारा ही रब है शायद
मिट्टी या पत्थर की मूरत आप को थी इन सबसे नफ़रत
लेकिन इस तारे की रफ़अत देख के बोले आख़िर हज़रत
इस का यह मतलब है शायद
यह तारा ही रब है शायद
तारा डूबा, तब घबराए ज़ाहिर हो कर जो छुप जाये
ऊपर चढ़ कर जो गिर जाये उससे दिल को कौन लगाये
यह क्या आक़ा, यह क्या रब है?
उसको सज़दा जाएज़ कब है?
दम भर बैठे ग़मगीं सूरत चाँद की देखी चाँद सी सूरत
चाँद को तारों से क्या निस्बत बैठी दिल पर उसकी अज़मत
बोले चाँद ही रब है शायद
लाज़िम उसका अदब है शायद
चाँद भी डूबा तब फ़रमाया रब है कोई और ही मेरा
जो न हिदायत करता रहता मैं गुमराही में जा गिरता
यह क्या आक़ा यह क्या रब है?
उसको सज़दा जाएज कब है?
सूरज निक़ला शान में आकर तारीकी का नूर बना कर
बोले यह है सबसे बढ़ कर हाज़ा रब्बी हाज़ा अकबर
क्या ही अरफ़अ आला रब है
सब पर लाज़िम उसका अदब है
लेकिन रफ़तह रफ़तह डूबा सूरज की क़िसमत का तारा
अक़्लो ख़िरद ने पलटा खाया जुज़ अल्लाह के सबका छोड़ा
बोल ऐ आक़ा तू रब है
तेरा दीन, मेरा मज़हब है
तेरी जानिब मुँह को मोड़ा रिश्ता अपना सबसे तोड़ा
सबसे तोड़ के, तुझ से जोड़ा हर मुशरिक को मैंने छोड़ा
ऐ आक़ा! बस तू ही रब है
ग़ैर को सजदा जाएज़ कब है

चर्ख़=आस्मान, रफ़अत=बुलन्दी, आक़ा=मालिक, ग़मगीं=शोकाकुल, निस्बत=सम्बन्ध, अज़मत=बड़ाई, लाज़िम=ज़रूरी, हिदायत=सच्चा रास्ता दिखाना, गुमराही=भटक जाना, तारीकी=अंधेरा, नूर=रोश्नी, यह मेरा रब है और रब सब से बड़ा है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की मूल्यवान नसीहतें

—इं0 जावेद इक़बाल

(1). तुम जहाँ, जिस हाल में हो, खुदा से डरते रहो (अर्थात सावधान रहते हुए ज़िन्दगी गुजारो) और हर बुराई के बाद (यदि कोई बुरा काम हो जाये) नेक काम कर लो ऐसा करना बुराई को मिटा देगा और अल्लाह के बन्दों के साथ व्यवहार कुशल रहो।

(मुसनद अहमद, जामे तिर्मिज़ी)

(2). जब तुम नमाज़ पढ़ो तो ऐसी पढ़ो जैसे यह तुम्हारी आख़िरी नमाज़ हो और तुम सब से विदा हो रहे हो।

(3). ऐसी कोई बात ज़बान से मत निकालो जिस के लिए तुम्हें माफ़ी मांगनी पड़े, जवाब देही करनी पड़े।

(4). लोगों के पास तुम्हें जो कुछ नज़र आता है उससे स्वयं को पूर्णतः निराश कर लो (अर्थात तुम किसी से कोई इच्छा न रखो) तुम्हारा ध्यान केवल सृष्टियों के पालनहार (रब्बुलआलमीन) की ओर रहना चाहिए।

(5). तीन चीज़ें नजात (मुक्ति) दिलाने वाली हैं और तीन ही चीज़ें हलाक़ कर देने वाली हैं, नजात दिलाने वाली तीन चीज़ें ये हैं:—

(i) ख़ुदा का ख़ौफ, खुले और छिपे हर हाल में।

(ii) हक़ (सत्य) बात कहना, खुशी में भी और क्रोध में भी।

(iii) मध्य मार्ग पर चलना, खुश हाली में भी और निर्धनता में भी।

और हलाक करने वाली तीन चीज़ें यह हैं:—

(i) मन की वह इच्छायें जिनके पीछे चला जाये।

(ii) कंजूसी की वह भावना जिस का इंसान गुलाम बन जाये।

(iii) खुदपसंदी (आत्मगौरव) की भावना, और यह सबसे बढ़ कर घातक है।

(6). चार गुण ऐसे हैं जो यदि तुम्हारे अन्दर आ जायें तो फिर दुन्या की (अन्य नेमतें) यदि न भी मिलें तो कोई चिन्ता नहीं, कोई घाटा नहीं।

(i) अमानत की हिफाज़त (धरोहर की रक्षा) करना।

(ii) बातों में सच्चाई।

(iii) कुशल व्यवहार।

(iv) खाने (पीने) में सावधानी अर्थात ईमानदारी की आजीविका पर निर्भर रहना।

(7). पाँच हालतों को अन्य पाँच के आने से पहले बहुमूल्य समझो और उनसे जो लाभ उठाना चाहो उठा लो—

(i) जवानी को बुढ़ापा आने से पहले।

(ii) स्वास्थ को बीमारी के आने से पहले।

(iii) खुशहाली को निर्धनता से पहले।

(iv) संतोष और इत्मीनान के दिनों को व्यस्त होने से पहले।

(v) जीवन को मौत आने से पहले।

(8). (i) जो चीज़ें अल्लाह ने हराम ठहराई हैं उन से बचो, यदि तुम ने ऐसा किया तो तुम इबादत गुज़ार (भक्त) होगे।

(ii) अल्लाह ने जो तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है उस पर सन्तुष्ट रहो, यदि ऐसा करोगे तो बड़े धनवान होगे।

(iii)अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करो, यदि ऐसा करोगे तो पूर्ण मोमिन (उच्च कोटि के ईमान वाले) होगे।

(iv) जो तुम अपने लिए चाहते हो, पसंद करते हो वही दूसरों के लिए चाहो और पसंद करो यदि ऐसा करोगे तो पूरे मुसलमान होगे।

(v) बहुत मत हंसा करो, ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा (निष्क्रिय) कर देता है।

व्याख्याः–

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने विभिन्न अवसरों पर विभिन्न लोगों के सामने कभी स्वतः और कभी उनके द्वारा पूछने पर अनेक नसीहतें की हैं। आप सल्ल0 की नसीहतों का मूल उद्देश्य यह है कि इंसान, अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हुए सावधानी पूर्वक जीवन गुज़ारे। अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को और जिन कामों को हराम घोषित किया है उनसे दूर रहे और जिन चीज़ों को हलाल ठहराया है उनका उपयोग करे, जिन कामों को अल्लाह पसंद करता है उन को करने का प्रयास करे। भले कार्य करे, बुरे कार्यों से बचे, शान्ति और सदभावना पूर्ण जीवन गुज़ारे, जुल्म और ज़ियादती न करे, पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार करे, इंसाफ की बात कहे, चाहे अपने किसी मित्र और रिश्तेदार के विरुद्ध ही क्यों न हो। सारांश यह कि हर समय इन्सान को विशेष कर ईमान वाले को चाहिए कि अपने मालिक अर्थात अल्लाह को खुश करने वाले कार्य करे, भले ही दुन्या वाले नाखुश हो जायें। ये ईमान को उच्च कोटि पर पहुंचाने वाले कार्य हैं तथा ये बड़े साहस के कार्य हैं। और साहस तब ही पैदा होता है जब इंसान को खुदा की पूर्ण सत्ता और आखिरत में हिसाब किताब और निर्णय पर पक्का यक़ीन होता है।

प्रत्येक जीव को मौत का मज़ा अवश्य चखना है इस में किसी को कोई सन्देह नहीं। कुर्आन ने इस हक़ीक़त को बयान करने के साथ एक बात और कही है, वह यह कि मरने के बाद प्रत्येक व्यक्ति को खुदा के पास उपस्थित हो कर अपने कर्मों का लेखा–जोखा पेश करना है। इस बात का यक़ीन यदि दिल में बैठ जाये तो फिर जीवन में ख़ुदा का डर आता है और सावधान बन कर कार्य करना सरल हो जाता है। मगर इंसान तो इंसान ही है कोई फ़रिश्ता नहीं, उससे भूल चूक होती ही रहती है। इसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अपनी नसीहतों (सत्परामर्श की बातों) में ग़लतियों को माफ़ कराने के उपाय भी बताये हैं। जैसे हर बुरे काम के बाद (यदि) ग़लती से हो जाये तो कोई

शेष पृष्ठ .....35....पर

दुआ

—इदारा

कोरोना से या रब तू हम को बचा
कोरोना से या रब तू सब को बचा
गुनाहों को बन्दों के कर दे छमा
कोरोना को या रब तू अब ले उठा
भले काम करने का सामर्थ्य दे
बुराई से बचने का सामर्थ्य दे
अनाथों की सेवा का सामर्थ्य दे
अपने बन्दों की सेवा का सामर्थ्य दे
सारी उम्मत के लोग अब नमाज़ें पढ़ें
सारी उम्मत के लोग अब तिलावत करें
नबी की इताअ़त को लाज़िम करें
दुरूदो सलाम उन पे पढ़ते रहें
कोरोना का टीका अगर आ गया
तो शुक्रे ख़ुदा उस पे लाए बजा
चिकित्सक हमें दें अगर मशवरा
तो लगवाएं टीका करें ना ख़ता
ख़ुदा से दुआएं भी करते रहें
गरीबों की सेवा भी करते रहें
उन्नत के रस्ते पे चलते रहें
तो हिम्मत से आगे ही बढ़ते रहें
करे रब दुआएं हमारी क़बूल
क़ाबिज़ वह हर शै पे जाएं न भूल
उसी की इबादत करें हम सदा
नहीं कोई माबूद उसके सिवा

मेहमान नवाज़ी

—माइल ख़ैराबादी

मेहमान नवाज़ी (अतिथि सत्कार) का मतलब है ''मेहमान को आदर और आराम के साथ अपने घर में ठहराना और उसकी सेवा करना''— मेहमान नवाज़ी की एक कहानी हमने अरबी भाषा की एक किताब में पढ़ी। अब वह कहानी आसान कर के हम लिख रहे हैं। आशा है कि लोग बड़े चाव से पढ़ेंगे और इससे शिक्षा प्राप्त करेंगे लिखने वाले ने यह कहानी इस तरह लिखी है—

''मुझे एक अच्छे ऊँट की ज़रूरत थी। मैं ऊँट खरीदने बाज़ार गया। ऊँटों के बाज़ार में बहुत से ऊँट थे। मैंने एक ऊँट पसन्द किया। यह ऊँट एक बद्दू का था। मैंने ऊँट की क़ीमत पूछी। उसने ऊँट की क़ीमत सात सौ रियाल बताई। उस ऊँट की क़ीमत सात सौ रियाल ज़ियादा मालूम हुई, मैंने पाँच सौ रियाल लगाये, बद्दू राज़ी न हुआ। मैं दाम लगा कर दूसरे ऊँट देखने लगा, मगर अब कोई दूसरा ऊँट जच नहीं रहा था। मैं फिर उसी बद्दू के पास पहुँचा और पचास रियाल क़ीमत और बढ़ाई बद्दू अब भी राज़ी न हुआ।

वह बद्दू शाम तक अपना ऊँट लिए खड़ा रहा, लेकिन उसका ऊँट बिक न सका, और भाई बिकता कैसे? वह क़ीमत भी तो बहुत मांग रहा था। परिणाम यह हुआ कि बाज़ार का समय समाप्त हो गया और बद्दू ऊँट ले कर चला गया।

वह ऊँट मुझे इतना अधिक पसंद आया था कि जब बद्दू चला गया तो मुझे अफ़सोस होने लगा। दिल में कहा कि सात सौ रियाल का खरीद लेना चाहिए था। अब क्या हो, उस बद्दू का पता भी नहीं मालूम। मैंने बाज़ार वालों से उसका पता पूछा। एक दुकानदार से उसका पता मालूम हुआ। मैं दूसरे दिन सुबह ही सुबह उस पते पर चल दिया। मैं घोड़े पर सवार हो कर गया। रास्ते में मुझे तीन घण्टे लगे तब मैं उस बद्दू के गाँव में पहुँचा। दूसरे बद्दुओं से उसका घर मालूम किया। लोगों ने बताया कि वह किनारे वाला घर उसी का है। मैंने उसके दरवाज़े पर जा कर आवाज़ दी, वह निकला, मैंने उसे सलाम किया, उसने सलाम का जवाब दिया और ''आपका आना मुबारक, आपका आना मुबारक'' कहता हुआ मेरी तरफ़ लपका, गले मिला, फिर मेरे घोड़े को एक तरफ़ बाँधा, उसके लिए चारा पानी रख दिया, कुछ खजूरें और पानी ला कर रखा, मैंने खाया पिया और सो गया। मैं जुहर के समय तक सोता रहा, जुहर के समय उठा, हाथ मुँह धोया, बद्दू ने बहुत अच्छा भुना हुआ ऊँट का गोश्त ला कर रखा और बड़ी खुशी के साथ बैठ कर खाने और खिलाने लगा, खाना खाते समय वह बार बार अलहम्दु लिल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह कहता जाता था।

खाना खाने के बाद हम बैठे, बातें करने लगे। बातों में मैंने कहा कि मैं सात सौ रियाल लाया हूँ आप अपने ऊँट की क़ीमत

ले लीजिए और ऊँट मुझे दे दीजिए। यह सुन कर वह मुस्कराया और बोला, ''भाई! अब वह ऊँट किसी क़ीमत पर नहीं मिल सकता।'' मैंने पूछा, क्यों?'' बोला, ''मैंने उसे आपके आने की ख़ुशी में ज़िबह करा दिया।''

मैं यह सुन कर हैरान रह गया। मैंने उससे पूछा, ''क्या कोई दूसरा जानवर आप ज़िबह नहीं कर सकते थे?''

जवाब दिया, ''मेरे पास उसके सिवा कोई दूसरा जानवर ही नहीं था, और न पैसे ही थे कि कोई और जानवर खरीदता।''

यह सुन कर मैं भौंचक्का रह गया। फिर बातों ही बातों में मुझे अपने आप मालूम हो गया कि वह बद्दू बहुत ग़रीब आदमी है। वह ऊँट उसे उसके बाप के तरके में मिला था, उसे वह बहुत चाहता था। कई बार उस ऊँट के अच्छे दाम लगे। लेकिन बाप की उस निशानी को उसने नहीं बेचा। अब उसकी शादी होने वाली है। खर्च न होने की वजह से मजबूर हो कर कल बेचने गया था।

यह सुन कर मुझे बड़ा दुख हुआ। मैंने उससे कहा कि ख़ैर जो हुआ सो हुआ, अब आप ये सात सौ रियाल रख लीजिए और मैं जाता हूं। बद्दू रूपये लेने पर किसी तरह राज़ी न हुआ तो मैंने एक नमदे के नीचे रूपयों की थैली रख दी, उसे नहीं बताया और उससे विदा हो कर घर चला आया।

दूसरे दिन क्या देखता हूं कि वह बद्दू मेरे घर आ गया। वह मुझ पर बहुत नाराज़ हुआ। थैली मेरी तरफ़ बढ़ा कर कहने लगा, ''वल्लाह ऐ शैख़! अगर तुम रूपये न लोगे तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूँगा।''

मैंने रूपये ले लिये फिर उसे बहुत रोका मगर वह न रुका और उसी वक़्त अपने घर वापस चला गया।

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 .....

भला काम कर लो और पुनः बुरा न करने का सच्चा वादा करके अपने ख़ुदा से माफ़ी मांग लो, क्षमा याचना कर लो और उम्मीद रखो कि वह मालिक अवश्य ही तुम्हें माफ़ कर देगा, क्योंकि वह बहुत रहम करने वाला और माफ़ करने वाला है। वह माफ़ करने को पसंद करता है। एक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि तुम, लोगों की गलतियों को माफ़ कर दिया करो क्या तुम नहीं चाहते कि ऊपर वाला तुम्हें माफ़ करे।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की नसीहतों से लाभ वही व्यक्ति उठा सकता है जिसको ख़ुदा की पूर्ण सत्ता पर, उस की शक्ति पर, उस के द्वरा स्थापित किए जाने वाले निर्णय के दिन पर, आख़िरत के स्थाई जीवन पर, वहां के स्वर्ग और नरक पर पूर्ण विश्वास होगा। अन्यथा सन्देह की घाटियों में भटकता हुआ इंसान अपनी मनमानी राहों पर चलने के लिए तरह–तरह के फ़लसफे गढ़ता रहेगा और मन की झूठी शान्ति के लिए ढोंगी, स्वार्थी और मिथिक बाबाओं, गुरुओं, और मुजाविरों के शोषण का निशाना बनता रहेगा।

❖❖❖

वास्तविक सफलता

—उबैदुल्लाह मतलूब

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को पवित्र कुर्आन द्वारा सूचित करता है—

अनुवादः— *हर जीव को मौत का मज़ा चखना है, तुम को अपने कर्मों का भरपूर प्रतिफल तो क़ियामत में दिया जायेगा, उस दिन जिसको जहन्नम की आग से छुटकारा मिल जायेगा और जन्नत में प्रवेश का आदेश पत्र मिल जायेगा वही सफल होगा, यह सांसारिक जीवन तो केवल धोखे की सामग्री है।*

(सूरः आले इमरानः185)

एक मुसलमान नमाज़ पढ़ता है, रमज़ान के रोज़े रखता है, अगर मालदार है तो ज़कात देता है, अगर सामर्थ्य रखता है तो हज करता है, हलाल खाता है, हराम से बचता है, बदनिगाही और ज़िना से दूर रहता है, जाइज़ निकाह के बाद ही औरत से सम्बन्ध रखता है, बे सहारा अनाथों तथा विधवा की मदद करता है, नेत्र हीनों की मदद करता है और भी बहुत से भले काम करता है परन्तु उसको इन भले कामों का प्रतिफल इस संसार में नहीं मिलता सिर्फ़ एक मोमिन कोई भला काम इस संकल्प से करता भी नहीं कि उसको उसका प्रतिफल इस संसार में मिल जाये। कभी किसी भले काम का लाभ इस संसार में भी मिल जाता है।

दूसरी ओर इस संसार में ईश्वर ही को नकारते हैं तो कोई ईश्वर का साझी ठहराता है कोई अत्याचार करता है, कोई दुष्कर्मी है, कोई घूसखोर है, कोई डकैती करता है, कोई आतंकी है, तात्पर्य यह है कि भांति—भांति के बुरे कर्म करता है, कभी किसी बुरे काम की सज़ा इस दुन्या में भी मिल जाती है परन्तु सारे बुरे कामों की सज़ा इस संसार में नहीं मिल पाती है, पवित्र कुर्आन बताता है कि हर भले और बुरे कर्म का पूरा—पूरा प्रतिफल क़यामत में मिलेगा, जब कर्मों का लेखा जोखा होगा, कर्म तौले जायेंगे, जिसके बुरे कर्मों का पलड़ा भारी होगा उसको जहन्नम में जाने का आदेश होगा, जहन्नम में आग होगी, जहन्नम में बड़ा दुख होगा, ऐसा दुख जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। जिसकी भलाई का पलड़ा भारी होगा, उसको जन्नत में जाने का आदेश पत्र मिलेगा, वह जन्नत में प्रवेश करेगा, जन्नत में सुख ही सुख है, ऐसा सुख जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती, जन्नत वालों से अल्लाह प्रसन्न और राज़ी होगा, जो जन्नम में जायेगा वह सदैव उसी में रहेगा, क़ियामत के दिन जिसको जहन्नम से बचा कर जन्नत में प्रवेश मिलेगा उसको बड़ी सफलता मिलेगी, आदमी परीक्षा में सफल होता है, कारोबार में सफल होता है, प्रतियोगिता में सफल होता है, यह सब सफलतायें अस्थाई होती हैं परन्तु जन्न्त में प्रवेश की सफलता स्थाई होती है, वही वास्तविक सफलता है,

शेष पृष्ठ .....39....पर

कोरोना से सावधान

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी, नसीराबादी

अगर जीवन सफल करना है, तो कोरोना से बचना है।
सुनो यह जान लेवा है, हमें कोरोना से बचना है।।

यह घातक मर्ज़ आया है, यही संसार में हावी।
लगायें मास्क चेहरे पर, हमें कोरोना से बचना है।।

कहीं पर भीड़ मत करना, प्रशासन सख़्त है इस दम।
शासन के दिशा निर्देश पर, कोरोना से बचना है।।

स्वदेशी हों, विदेशी हों, कोई बाहर से गर आये।
चेकअप फौरन कराना है, हमें कोरोना से बचना है।।

कहीं पर भीड़ हो जाये, तो दूरी हम बना रखें।
किसी को टच नहीं करना, अगर कोरोना से बचना है।।

बुखार, खाँसी, जुकाम हो जाय, दवा फौरन करा लेना।
गले का हर मरज़ रोको, अगर कोरोना से बचना है।।

फिज़ा में वायरस फैला, मचा कोहराम दुनिया में।
स्वच्छता की करें कोशिश, अगर कोरोना से बचना है।।

सियासत की हवा अब गर्म है, इस लाक डाउन में।
हमें मालिक से डरना है, अगर कोरोना से बचना है।।

ख़ुदा नाराज़ है, राजी करें, तौबा करें, हम सब।
सिद्दीक़ी भी अमल कर ले, अगर कोरोना से बचना है।।

चुटकुले

सलाद

नमक प्याज़ से सलाद बनाया
रस लेमू का उसमें मिलाया
हर खाने के साथ में खाया
खाने का यूँ स्वाद बढ़ाया
तीव्र गंध की प्याज़ को खाया
रोग कीटाणू मार भगाया

चटनी

लहसुन मिर्चा नमक की चटनी
स्वास्थ की रक्षा वाली चटनी
पाचन क्रिया वाली चटनी
हवा निकासन वाली चटनी
हर दिन चटनी खायें लोग
दूर रहे संक्रमण रोग

मूली

उजली उजली मूली लाओ
हर खाने के साथ में खाओ
पाचन क्रिया खूब बढ़ाओ
हवा पेट की बाहर लाओ
खाया खूब डकारें लाओ
मूली खाओ भूख बढ़ाओ

❖❖❖

पुदीना

—फौज़िया सिद्दीक़ा बी0ए0

पुदीना मशहूर ख़ुशबूदार चीज़ है क़स्बों और देहातों में सब जगह मिलता है, आमतौर पर उस की ख़ुशबू के लिए सालन में डालते हें, खुशबूदार होने के अलावा यह खाने को हज़्म करता है, मेदे को क़ुव्वत देता और रियाह को निकालता है इसलिए इस की चटनी बना कर खाने के साथ खाते हैं, इसमें ज़हरों को रफ़ा करने की भी तासीर है, इसलिए बाज़ ज़हरों को दूर करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। चुनांचे बदहज़मी और हैज़ा में पुदीना 6 ग्राम और इलाइची तीन ग्राम को आधा लीटर पानी में जोश दे कर छान कर बार बार पिलाने से मतली और क़ै बन्द हो जाती है, पेट का दर्द भी दूर हो जाता है और प्यास कम हो जाती है।

बिल्ली, नेवले और चूहे ने काट लिया हो या भिड़, बिच्छू ने डंक मारा हो तो पुदीना पीस कर लगाने से आराम हो जाता है।

हरे पुदीने का पानी निकाल कर टपकाने से नाक, कान और दूसरे अंगों के ज़ख़्मों के कीड़े मर जाते हैं।

पुदीना पित्ती के लिए भी मुफीद है, पुदीना सब्ज़ दस ग्राम और अगर ख़ुश्क हो तो 6 ग्राम शकर सुर्ख़ बीस ग्राम पानी में जोश दे कर पिलाने से यह मर्ज़ दूर हो जाता है। बाज़ हकीम पुदीना सब्ज़ का पानी दस ग्राम अ़र्क़ गुलाब पचास ग्राम, सिकंजबीन सादा दस ग्राम, तीनों को मिला कर पिलाते हैं, तीन चार ख़ुराक पिलाने से पित्ती जाती रहती है।

बरसात के मौसम में पुदीना नायाब हो जाता है बरसाती पानी पुदीना को मुवाफ़िक़ नहीं आता लोग पुदीना को गमलों में लगा लेते हैं और बरसाती पानी से बचाते हैं।

❖❖❖

वास्तविक सफलता.....

हमको चाहिए हम बुरे कामों से बचें और भले काम अपनाएं, बुरे काम वही हैं जिनको अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुरा कहा और उनसे रोका भले काम वही हैं जिनको अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भला कहा और करने का आदेश दिया, हम अल्लाह के अन्तिम नबी का अनुसरण करें उनसे प्रेम रखें उन पर दुरूद व सलाम पढ़ें ताकि वास्तविक सफलता प्राप्त हो, यह सांसारिक जीवन यह सब धोखे की सामग्री है, आदमी धोखे में पड़ कर मौत को भूल जाता है परन्तु एक दिन मौत आती है और सांसारिक जीवन समाप्त हो जाता है, नज़ीर अकबराबादी ने क्या अच्छी बात कही है—

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा
जब लाद चलेगा बंजारा

❖❖❖

तब्लीग़ की अहमियत

—अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी रह0

ज्ञानात्मक तब्लीग़ व दअ़वत ''नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना'', इस्लाम के शरीर की रीढ़ की हड्डी है, इस पर इस्लाम की बुन्याद, इस्लाम की ताक़त, इस्लाम का विकास और इस्लाम की कामयाबी निर्भर है और सब ज़माने से बढ़ कर इसकी ज़रूरत है, और ग़ैर मुसलमानों को मुसलमान बनाने से ज़ियादा अहम काम मुसलमानों को मुसलमान, नाम के मुसलमानों को काम का मुसलमान और क़ौमी मुसलमानों को दीनी मुसलमान बनाना है, सच है कि आज मुसलमानों की हालत देख कर कुर्आन पाक की यह पुकार ऐ मुसलमानो! मुसलमान बनो, को पूरे ज़ोर शोर से बुलन्द किया जाये, (सूरः निसा—136)

नगर नगर, गाँव—गाँव और दर दर फिर कर मुसलमानों को मुसलमान बनाने का काम किया जाये, और इस राह में वह जफ़ाकशी, वह मेहनत कोशी, और वह हिम्मत और कूव्वत, मुजाहिदा किया जाये जो दुन्यादार लोग, दुन्या के जाह व मन्सब मान मर्यादा और ताक़त के हासिल करने में ख़र्च कर रहे हैं जिस में उद्देश्य को पाने के लिए बहुमूल्य पूंजी को कुरबान करने और हर रुकावट को बीच से हटाने के लिए असाध्य शक्ति पैदा होती है, कशिश (आकर्षण) से कोशिश से जान व माल से, हर ओर से इसमें क़दम आगे बढ़ाया जाये और मक़सद को पाने के लिए जुनून उन्माद की वह कैफ़ियत अपने अन्दर पैदा की जाये जिसके बिना दीन व दुन्या का न कोई काम हुआ है और न होगा।

❖❖❖

कोरोना बढ़ रहा है

क्यों कोरोना बढ़ रहा है
कर रहे हैं सब विचार
लाख हा पीड़ित हुए हैं
और मरे हैं बे शुमार
गर यही हालत रही
सब काम ठप हो जाएंगे
हो गये पीछे हैं हम
और पीछे हो जाएंगे
देश के अधिकांश लोग
कर रहे हैं एहतियात
पर बहुत से लोग हैं
करते नहीं हैं एहतियात
जब हमें शंका लगे
डॉक्टर से हम मिलें
जिस्म का जो हाल हो
डॉक्टर से हम कहें
जो मिले निर्देश हमको
हम अमल उस पर करें
अपने मन से सोच कर
कोई दवा हम न करें

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख _____

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखी उर्दू के अशआर पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

جاڑے کے موسم میں بھائی	जाड़े के मौसम में भाई
کیا کھائیں اک گیت بنائی	क्या खायें इक गीत बनाई
بھنے چنے اور لائی کھاؤ	भुने चने और लाई खाओ
مرچ نمک اور پیاز ملاؤ	मिर्च नमक और प्याज़ मिलाओ
مکئی عمدہ گھر میں بھُناؤ	मकई उमदा घर में भुनाओ
مزے دار مُرمرے چباؤ	मज़े दार मुरमुरे चबाओ
کھچڑا لذّت دار پکاؤ	खिचड़ा लज़्ज़त दार पकाओ
خوب مزے لے لے کر کھاؤ	ख़ूब मज़े ले ले कर खाओ
جاڑا گرمی اور برسات	जाड़ा गर्मी और बरसात
رب کے ہیں یہ انعامات	रब के हैं यह इनआ़मात